श्री नवपद आराधन विधि

तथा

श्री अक्षयनिधि तप विधि

संग्राहक—

व्याख्यान दिवाकर विद्याभूषण

श्री हीरालालजी दूगड़ (स्नातक)

अध्यापक—श्री आत्मानन्द जैन हाई स्कूल

अम्बाला शहर (पंजाब)

प्रकाशक—

श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मंडल

रोशन मोहल्ला, आगरा

व्याख्यान दिवाकर-विद्याभूषण पं० हीरालालजी दूगड़ द्वारा लिखित निम्न पुस्तकें मंगावें—

१— जीवविचार प्रकरण सचित्र मूल्य १॥)

जिसकी पूज्य जैनाचार्यों, मुनिराजों, साध्वियों तथा गण्य-मान्य विद्वानों ने भूरी-भूरी प्रशंसा की है। बाल जीवों तथ विद्वानों एवं संक्षिप्त रुचिवालों और विस्तारपूर्वक ज्ञान प्राप्त करने वालों के लिए अति सुन्दर शैली से विद्वान लेखक ने तैयार किय है। सब महानुभावों को अवश्य लाभ उठाना चाहिए। बहुत थोडी पुस्तकें मौजूद है।

२— आत्म-ज्ञान प्रवेशिका मूल्य ।॥)

यह पुस्तक आत्मार्थी महानुभावों तथा विद्यार्थियों के लि बहुत उपयोगी है। इसे इस सुन्दर शैली से संपादन किया है कि जिसको पढने से किसी भी प्रकार के मत-मतांतरों के झगडो के बिना आत्मा के ज्ञान का विकास होता है तथा प्रतिपादन किये गये विषय को सरलता से व्यवहार मे लाया जा सकता है। बहुत थोडी पुस्तकें मौजूद हैं। शीघ्र मंगाइये, नहीं तो अगली आवृत्ति का इन्तजार करना पड़ेगा।

श्री नवपद आराधन विधि

तथा

श्री अक्षयनिधि तप विधि

संग्राहक—

श्री हीरालालजी दूगड (स्नातक)

प्रकाशक :—

श्री आत्मानंद जैन पुस्तक प्रचारक मंडल

रोशन मोहल्ला, आगरा

कलकत्ता निवासी,

श्रीमती तारादेवी धर्मपत्नी श्री बाबू हरखचन्दजी काकरिया
की तरफसे स्वर्गीया विमला कुमारीके स्मणार्थ १००० प्रति भेंट।

मुद्रक—

रेफिल आर्ट प्रेस

(आदर्श साहित्य सघ द्वारा सचालित)

३१ वड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता

चैत्री पूनम २०११

प्रथम संस्करण] प्रति १२०० [मूल्य

आभार

धर्मपरायणा, विनयादि गुण सम्पन्ना सुश्राविका श्रीमती माननीया तारादेवी धर्म-पत्नी श्री हरखचन्दजी कांकरियाने अपनी प्रिय पुत्री विमलाकुमारीके स्मरणार्थ इस पुस्तककी एक हजार (१०००) प्रतियां अपने खर्चसे छपवाकर श्री नवपद ओली करनेवाले महानुभावोंको निशुल्क भेंट की है।

विमला कुमारी का परिचय

यों तो इस संसार में अनेक बालक बालिकायें निरन्तर उत्पन्न होते और मरते रहते है, उनकी ओर लक्ष कौन देता है ? किन्तु जो बालक-बालिकायें पैदा होने के बाद माता पिता के लिए मनो-विनोद का साधन बन जाते हैं। दीपककी भांति घर को प्रकाशित कर देते हैं। एवं अलंकारके समान सभी लोग उनका अत्यन्त आदर और सम्मान करने लग जाते हैं। उन्हीं का जन्म लेना सार्थक माना गया है। ऐसे ही विरले बालक-बालिकाओं मे विमलाकुमारी का भी नामोल्लेख करना अनुचित न होगा।

विमलाकुमारी का जन्म सं २००५ कार्तिक शुक्ला १४ के दिन हुआ था। इनके पिता का नाम बाबू हरखचन्दजी कांकरिया एव माता का नाम तारादेवी हे। इसका शिशु-काल का रहन-सहन बड़ा ही सुहावना था। माता के साथ सामायिक-स्वाध्याय एवं देव दर्शन में आने-जाने से उनकी धार्मिक-भावना भी

प्रज्वलित हो चुकी थी। जहाँ-तहाँ अपने मेली-जोली परिवार में आती जाती तो उनके रूप-लावण्य एवं मुग्ध-भाव को आलोकित कर स्वजन-बन्धु बड़े ही प्रसन्न होते। किन्तु संसार का नियम है कि जो वस्तु या मनुष्य उत्तम और होनहार होता है वह संसार मे थोड़े ही दिन रह कर नष्ट हो जाता है। यही बात विमलाकुमारी मे घटित हुई। सं २००८ के श्रावण शुक्ला द्वितीया के दिन अपने माता-पिता आदि परिवार को त्याग कर इस संसार-चक्र से पृथक् हो, सदा के लिए विदा हो गई। कराल काल की गति बड़ी ही विचित्र है इसमे किसी का वस नहीं चलता। अस्तु।

चैत्र शुक्ला १५
सं २०११ } हीरालाल दुगड़

प्रथम से होनेवाले ग्राहकों की सूची

१००० पुस्तकें श्रीमती ताराबाई धर्म पत्नी बाबू हरखचंदजी कांकरिया कलकत्ता

६७	पुस्तकें	शा०	भानमलजी मूलाजी	माडवला-मारवाड़
३३	"	शा०	खीमाजी घेवरचन्दजी	सेलम
१७	"	शा०	सुकराजजी पित्ताजी	बजवाड़ा
१७	"	शा०	पुखराजजी गोमाजी	ओटवाला मारवाड़
७	"	शा०	मिश्रीमल मोतीलाल	बजवाडा

११४१ कुल जोड

दो शब्द

श्री नवपद आराधन विधि तथा अक्षय निधि तप विधिका इस संक्षिप्त संग्रहकी १००० पुस्तक कलकत्ता निवासी धर्मनिष्ठा विनयादिगुण सम्पन्ना सुश्राविका सेठानी श्रीमती तारादेवीजी धर्म-पत्नी सेठ साहेब श्रीयुत् हरखचन्दजी काकरियाकी तरफसे प्रकाशित होरही है इसलिये यह सब संग्रह उनकी इच्छानुसार किया गया है।

पुस्तकके प्रूफ आदिका संशोधन तथा इसके प्रकाशनका सब भार मेरे परम मित्र धर्मनिष्ठ श्रेष्टिवर्य श्रीयुक्त ताजमलजी साहेब बोथरा फर्म सेठ रावतमलजी हरखचन्दजी सा० बोथरा कलकत्तावालोंने अपना अमूल्य समय देकर बड़े परिश्रमपूर्वक उठाया है इसके लिये मैं उनका जितना भी धन्यवाद करूं थोडा है। यदि कोई श्री सिद्धचक्रके आराधक महानुभावने किसी समय अधिक उदारता दिखलाई तो इस पुस्तकका सर्वाङ्ग सुन्दर दूसरा संस्करण आप महानुभावोंके करकमलोंमें उपस्थित करनेकी मेरी अभिलाषा कार्यान्वित हो सकेगी। इस पुस्तकमे सब प्रकारकी शुद्धिका ध्यान रखागया है फिरभी दृष्टि-दोषसे जो प्रूफकी भूलें रह गई हैं उनको शुद्धि पत्रमे देखकर उस-उस स्थान पर अपनी लेखनीसे सुधार लेनेका कष्टकर लेना आवश्यक है जिससे विधि करनेवालोंको अशुद्धिका दोष न लगे।

श्री आत्मानन्द जैन हाई स्कूल
अम्बाला शहर (पंजाब)

अध्यापक हीरालाल दूगड़ जैन
मिति चैत्री पूनम सं० २०११

समर्पण

परमाराध्य पूज्या वर्त्तमान तृतीय माता
श्रीमती मायादेवीजी के
श्री करकमलों में

स्नेहमयी मा ! तुम्हारे इस पुत्रका भत्त्युपहार ग्रहण करो। मैं इस पुस्तकको पुष्पाञ्जली स्वरूप कल्पना कर श्रद्धा चन्दन सहित संयुक्तकर आपके पवित्र करकमलोंमे समर्पण करता हू। आपकी सन्तानको आशीर्वाद दो मा। कि यह दीन-हीन आपका वालक साधुजनों द्वारा प्रशंसित पथपर चलकर सर्वदा श्री वीतराग चरणारविंदका ध्यान करतेहुए इस संसार-जलधिसे उत्तीर्ण हो सके।

मा ! मेरे प्रति जो-जो तुम्हारे अगाध वात्सल्य और उपकार है, उनका वदला चुकानेके लिये इस जीवनमे मैं तुम्हारे योग्य पूजा करनेमें असमर्थ रहा हूं। तज्जन्य आज उस उद्देश्यके लिये तुम्हारे चरणोंमे मस्तक रखकर भक्ति प्लावित नयनोंकी दर-दर धाराओं द्वारा तुम्हारे चरण युगल प्रक्षालित करता हूं। जीवनमें, मरणमें तथा जन्मान्तरमे तुम्हारा आशीर्वाद लेनेके लिये नतमस्तक रहूंगा।

चरण किंकर
हीरालाल

निवेदन

आजके अशान्त विश्व को वास्तविक शांति प्राप्त करने के लिए श्री वीतराग सर्वज्ञ कथित परम कल्याण कारी जैनधर्म को समझने और अपनाने की परम आवश्यता है। आज भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी होने जा रही है विद्वानों के पढ़ने योग्य शुद्ध हिन्दी भाषा में श्वेताम्बर जैन साहित्य का अभाव तो खास खटकने जैसी बात है। इसलिए प्रत्येक शासन प्रेमी का कर्त्तव्य है कि वह जैनधर्म के प्रत्येक विषय के साहित्य को प्रकाश में लाकर प्रचार करने में सहयोग दें। जो शासन प्रेमी महानुभाव शुद्ध हिन्दी में ग्रन्थ लिखवाना या प्रकाशित करना करवाना चाहते हों वे इस पते से व्यवहार करें।

श्री हीरालाल दूगड़ जैन
C/o ओसवाल जनरल स्टोर्स
लोहारगली आगरा (यू० पी०)

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ

श्री नवपद आराधन विधि

[तपस्या ग्रहण करनेको गुरु महाराजके पास जानेकी विधि]

प्रथम शुभ दिन, शुभ घड़ी देखकर अच्छे वस्त्र आभूषण आदि पहने। मस्तक पर तिलक करे। दाहिने हाथकी कलाई पर मौली बांधे। अक्षत, सुपारी, श्रीफल, नैवेद्य, यथाशक्ति रोक नकदी (चांदीका सिक्का जैसे कि चवन्नी, अठन्नी, रुपया) लेकर नवकार गिनते हुए गुरु महाराजके पास जावे। द्वादशावर्त्त वन्दना करके ज्ञान पूजा करे। पीछे बड़े उत्साह और प्रमोद युक्त होकर गुरुके मुखसे ओली तप ग्रहण करे।

तपस्या ग्रहण करनेको विधि आगे लिखेंगे।

श्री नवपद ओली करनेकी विधि

जिसकी अपूर्व महिमाका शास्त्रकारोंने वर्णन किया है ऐसे श्रीनवपदमय सिद्धचक्रके आराधन के लिए किसी भी वर्षकी आसोज सुदी ७ से ओली शुरु करें। यदि तिथि घटी होतो सुदी ६ से बढ़ी हो तो सुदी ८ से शुरु करके नव आयबिल पूनम तक करें। फिर चैत्र मासकी सुदी ७ से ओली करें। यदि तिथि घटी हो तो सुदी ६ से यदि बढ़ी हो तो सुदी ८ से शुरु करके पूनम तक नव आयंबिल करें इस प्रकार छः छः मास बाद नव ओली करें। यह तप साढ़े चार वर्षमें पूर्ण होता है।

क्रियाका बाह्य शरीरोपयोग

१—प्रतिक्रमण, पडिलेहण, देववन्दन, खमासमण, काउसग्ग आदि तमाम क्रिया करनेके पवित्र उचित स्थानमें चन्द्रोवा बाँधा हुआ होना चाहिए।

२—आयंबिलकी रसोई, भोजन करने, पानी ठण्डा करने आदिके स्थापनोंमें भी चंद्रोवा बंधा हुआ होना चाहिए।

३—थाली, कटोरी, पट्टा, गलास, कलशा, पहननेकी धोती, खेस कम्बल आदि काममें आने वाली सब वस्तुएं स्वच्छ तथा पवित्र होनी चाहिए धोती आदि वस्त्र मांड विनाके धुले हुए होने चाहिए, कटे तथा जोड़वाले नहीं होने चाहिए। काममें आनेवाले पट्टे हिलते हुए नहीं रहने चाहिए।

४—पानी पीनेके बाद तुरत उस वर्तनको पूंछकर सुखा देना चाहिए। ऐसा नहीं करनेसे गीला रह जानेसे दो घड़ी बाद समूर्छिम जीवोंकी उत्पत्ति होती है।

५—पूजाके उपकरणोंकी शुद्धिका विशेष उपयोग रखें।

६—क्रिया करते समय भाव शुद्धि पर पूर्ण लक्ष्य रखें।

७—पूजा करते समय पूजाके उपकरण जैसे कि कलश, धूपदानी, केशर चन्दनकी कटोरी, नैवेद्य, फलका थाल वगैरह नाभिसे ऊपर एवं मुख तथा नासिकाका श्वास नहीं लगे इस प्रकार हाथ में रखना चाहिए।

८—नवकारवाली (माला) तथा पुस्तक आदि पवित्र ऊंचे स्थान पर रखना चाहिए। चरवले पर, आसन पर अथवा इधर उधर रख देने की प्रथा प्रायः देखी जाती है। ऐसा करनेसे आसातना होती है इसलिए ऐसा नहीं करना चाहिए।

९—सामायिक-प्रतिक्रमण करनेसे पहले टट्टी-पेशाब आदि की हाजतसे निवृत हो जाना चाहिए। यदि सामायिक-प्रतिक्रमणमें शौच जाना पड़े तो माथे पर ओढ़नेका कम्बल, पूंजनेके दंडासन तथा अचित (फासु) पानीका खास उपयोग रखना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कम्बलके अभावमें बैठनेका आसन मस्तक पर

रखकर शौचादि जाते हैं। ऐसा करनेसे विराधना होती है। इसलिए इस बातका विशेष ध्यान रखनेकी आवश्यकता है। पड़िलेहणादि करते समय कांजा लेनेके लिए काजा उद्धरणी (पूंजनी) सुपड़ीका उपयोग रखें।

आराधक भव्य जीवोंके प्रारंभिक कृत्य

१—प्रारम्भमें दीन अनाथ आदि प्राणियों को मनमें संतोष देनेके लिए दान देवें।

२—छरी पालन करें—अर्थात् (१) शुद्ध ब्रह्मचर्य पालन, (२) भूमि पर संथारा (सोना) (३) एक समय भोजन करना, (४) दोनों समय प्रतिक्रमण करना (५) सचित्तका त्याग (६) पादचारी (नंगे पांव चलना)

३—आरम्भ-समारम्भके कार्योंका त्याग करें।

श्री सिद्धचक्र ओली तपका अधिकारी

शांत स्वभावी, अल्पाहारी, अल्प निद्रावाला, अकांक्षा रहित, धैर्यवान्, परनिन्दा न करनेवाला,

गुरु भक्त, कर्मक्षयका इच्छुक, राग-द्वेषकी मंदता वाला, दयालु, विनयी, इस लोक तथा परलोकके फलकी इच्छा न करनेवाला इत्यादि गुणवान् जीव श्रीनवपदकी आराधनाका अधिकारी है अतः प्रत्येक आराधकको इन गुणोंको प्राप्त करनेके लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए।

अथ स्थापना विधिः—

ओली शुरु होनेके दिन प्रातःकाल अथवा एक दिन पहले शुभ चौघड़ियेमें, पवित्र स्थान, उपाश्रय, मन्दिर या मकानके निवृतिमय एकान्त शान्त ठिकानेमें सिद्धचक्राराधक भव्य जीव प्रथम उस स्थानको पूज प्रमार्जके धूपसे वासित बनाकर तीन चौकी पट्टे ऊपराऊपर स्थापित कर त्रिगडा बनावे, त्रिगडेके नीचे अक्षत—चांवलसे गहुँली बनावे, ऊपर नारियलके साथ अपनी यथाशक्ति सोना चांदीका नाणा चढ़ावे। त्रिगडेके ऊपर चँदुवा बांधे और त्रिगडे पर सिंहासनमें श्रीनवपद जीके गट्टे—मूर्ति या तन्त्रपट्ट आदि स्थापन करे;

स्थापन करते वक्त निम्नलिखित काव्य और मन्त्र पढ़े। यथा—

काव्यम्।

पूर्णाङ्क-पूतं परमं पवित्रं, यदर्हदाद्याप्त-पदैर्विचित्रम्।
श्रीसिद्धचक्रं हतवैरिचक्रं, नये सुपीठं नतसाधुशक्रम्

इय नवपय सिद्धं लद्धिविज्जा-समिद्धं,
पयडियसरवग्गं ह्रींतिरेहा समग्गं।
दिसिवइ-सुरसारं खोणिपीढ़ा-वंयारं,
तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥२॥

मन्त्र ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-साधुसम्यग्दर्शनज्ञान चारित्र तपोभूत श्रीसिद्धचक्र अत्रावतरावतर स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीसिद्ध-चक्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा।

इति पीठ प्रतिष्ठा काव्य मन्त्रः।

इस प्रकार गट्टाजी यन्त्र या मूर्तिये प्रतिष्ठा-पित कर उनके पास सुगन्धी ताजे घी का अखण्ड दीपक रखें और धूप करें और जिस तिथिसे ओलीजी का प्रारम्भ होता है उस रोज ये कृत्य करें।

ओलीमें प्रतिदिन करनेकी क्रिया

मुख्य वृत्तिसे नव आयंबिलमें पहला आयंबिल चावलका, दूसरा गेहूंका, तीसरा चनेका, चौथा मूंगका, पांचवां उड़दका*, तथा अंतिम चार चावलके—इस प्रकार एक धान्यके करें। यदि ऐसा न बन सके तो दूसरे प्रकारसे भी छः विगयके त्यागपूर्वक जैसे बने वैसे रस गृद्धि त्याग कर करे।

प्रत्येक आयंबिलके दिन जिन-पूजा, गुरु-वन्दन, दोनों समय प्रतिक्रमण, तीनों समय देव वन्दन, दोनों समय पडिलेहण, विधिपूर्वक पच्च-क्खाण पारण तथा प्रत्येक पदके जितने जितने गुण हों उतनी संख्यामें वे-वे गुण बोलकर खमा-समण दे, उतने लोगस्सका काउसग्ग करे, तथा प्रत्येक पदकी बीस-बीस नवकारवाली गिने।

---

* गेहूं, चने, मूंग, उड़द साबुत धान्यकी आयंबिल न समझे परन्तु गेहूंसे बनाई हुई रोटी आदि तथा चना, मूंग, उड़दकी दाल अथवा इसके बनाये हुए पदार्थ समझें।

प्रतिदिन नव मन्दिरोंमें जाकर नव चैत्य-वंदन करे, सिद्धचक्रकी वासक्षेपसे पूजा करे, स्नात्र पूजा करे, जिस दिन जिस पदका आराधन हो उस पदकी पूजा करे; अष्टप्रकारी पूजा करे। जिस गांवमें नव मन्दिर न हो तो एक मन्दिरमें नव चैत्य-वन्दन करे, गुणकी संख्या अनुसार उतने साथिये चावलके करे उनपर यथाशक्ति फल नैवेद्य चढ़ावे, जितने खमासमण देना हो उतनी ही प्रदक्षिणा देवे। तीन काल पूजा करे (प्रभातमें वासक्षेप द्वारा, मध्याह्नमें स्नात्र पूजा-अष्ट प्रकारी आदि तथा संध्याको धूप-दीप द्वारा पूजा करे) श्रीपाल राजाका चरित्र सुने, नवपदोंमेंसे एक-एक पदका ध्यान धरे—उसके गुणोंका चिंतन करने के लिए रातको संथारा पोरिसी पूर्वक भूमिशयन करे, ब्रह्मचर्य पाले, पच्चक्खाण गुरुसे (यदि योग हो तो) लेवे।

प्रथम दिन—ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं पदको

२० नवकारवाली—१२ गुण

दूसरे दिन—ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं पदकी
२० नवकारवाली—८ गुण

तीसरे दिन—ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं पदकी
२० नवकारवाली—३६ गुण

चौथे दिन—ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं पदकी
२० नवकारवाली—२५ गुण

पांचवें दिन—ॐ ह्रीं नमो लोएसव्वसाहूणं पदकी
२० नवकारवाली—२७ गुण

छठे दिन—ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स पदकी
२० नवकारवाली—६७ गुण

सातवें दिन—ॐ ह्रीं नमो नाणस्स पदकी
२० नवकारवाली—५१ गुण

आठवें दिन—ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स पदकी
२० नवकारवाली—७० गुण

नवमें दिन—ॐ ह्रीं नमो तवस्स पदकी
२० नवकारवाली—५० गुण

प्रथम दिन कर्तव्य विधि

चार घड़ी रात्रि शेष रहे तब जागृत होकर

पंच परमेष्ठि (नवकार) मंत्रका जाप करे, अपने स्वरूप का विचार करे—'मैं कौन हूं', 'कहां से आया हूं', 'कहां जाना है', 'मेरा कुल क्या है', 'मेरा धर्म क्या है', 'मेरा देव कौन है', मेरा गुरु कौन', 'मेरे धर्म और कुलके योग्य उचित कर्तव्य क्या है,' 'मैंने उत्तम कर्तव्य क्या क्या किये हैं और क्या क्या बाकी हैं, इत्यादि विचार करे, अनन्त पुण्योदयसे आराधनाका समय प्राप्त होने से अपूर्व उत्साह तथा वीर्योल्लास सहित श्री अरिहंत प्रभु की आराधना प्रथम दिन होनेसे श्री तीर्थंकर भगवान् के ध्यानमें अपने आत्माको लीन कर सामायिक अङ्गीकार करे तदन्तर प्रतिक्रमण करे। आयंबिलका पच्चक्खाण करे, बादमें सामायिक पारकर सूर्योदय समयके लगभग तमाम पड़िलेहण१ समाप्त हो जाय। इसप्रकार क्रियामें आनेवाले सब उपकरणोंको पड़िलेहणा करे। फिर सिद्धचक्रजी के स्थापना मंडपमें रज आदि प्रमार्जन करे।

१—पडिलेहण की विधि आगे दी है, वहां से देखें।

फिर धोती उत्तरासंग (खेस) पहनकर श्रीसिद्धचक्र के सामने चावलके १२ साथिये करे। श्रीसिद्ध-चक्रकी वासक्षेप पूजा करे। बारह खमासमण देते हुए प्रदक्षिणा दे, शक्तिके अभावमें बैठकर खमासमण दे नमस्कार करे। प्रदक्षिणा देते समय नीचे लिखे दोहेको बोले :—

दोहा

अरिहंत पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे।
भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थाय रे ॥१॥
वीर जिनेश्वर उपदिशे, तमे सांभलजो चित्त लावी रे।
आतम ध्याने आत्मा, ऋद्धि मले सवी आवी रे ॥१॥

(अरिहन्त पदके १२ नमस्कार)

१—अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय
श्री अरिहंताय नमः।
२—पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय
श्री अरिहंताय नमः।
३—दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय
श्री अरिहंताय नमः।

४—चामरयुगल प्रातिहार्य संयुताय
श्री अरिहंताय नमः।

५—सुवर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुताय
श्री अरिहंताय नमः।

६—भामंडल प्रातिहार्य संयुताय
श्री अरिहंताय नमः।

७—देवदुंदुभि प्रातिहार्य संयुताय
श्री अरिहंताय नमः।

८—छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय
श्री अरिहंताय नमः।

९—ज्ञानातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः।

१०—पूजातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः।

११—वचनातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः।

१२—अपायापगमातिशयसंयुताय श्री अरिहंताय नमः।

इसप्रकार खमासमण देकर फिर श्रीअरिहंत पद आराधनार्थ करेमि काउसग्गं, वन्दनवत्तियाए० अन्नत्थ, कहकर १२ लोगस्सका काउस्सग करे।

पारकर प्रगट लोगस्स कहे। फिर ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं इस पदकी बीस मालाएं गिने। फिर गुरु महाराजसे व्याख्यान सुने। फिर छने हुए शुद्ध जलसे पट्टे पर बैठकर स्नान करे, शरीरको अच्छी तरह पोंछकर पूजाके शुद्ध पवित्र वस्त्र (पुरुष धोती उत्तरासंग तथा आठ तहका मुखकोप तथा स्त्रियां पेटीकोट, साड़ी कुर्ती और आठ तह का मुखकोष) पहने। पूजोपकरण तथा पूजाकी सामग्री लेकर अपने परिवार, मित्र, बांधवों सहित श्री जिनमन्दिरमें जावे।

जिन मन्दिर की विधि—

मन्दिरमें जानेवाले भव्यात्मा १० त्रिकोंको धारे। जिनमें पहले त्रिकमें तीन निसिही (निषेध) करें, जिसमें पहली निसिही जिन मन्दिरमें प्रवेश समय बोले, यानी सांसारिक गृहसम्बन्धी कोई भी कार्यका विचार न करे और तीन प्रदक्षिणा देनेके बाद जिन मन्दिर सम्बन्धी फूटा टूटा कचड़ा कूड़ा आदि साफ करे। उसके बाद दूसरी निसिही कहे

यानी अब जिन मन्दिर सम्बन्धी कार्यको भी न करूंगा, ऐसा नियम करे। यहां द्रव्य पूजाकी छूट रहती है। फिर तीसरी निसिही द्रव्यपूजा करनेके बाद बोले यानी अब भावपूजा ही करे। यह पहिला निसिही त्रिक हुआ। दूसरा त्रिक ज्ञानादि त्रिककी आराधना करनेके लिए करे। प्रभुको पञ्चाङ्ग नमाकर तीन वार नमस्कार करे। प्रभुकी अंग–अग्र–भाव पूजा करे ऐसे दूसरा त्रिक करे। मन, वचन और कायाको गुप्त करे यानी संयमवान बने, हिलने फिरनेमें उपयोग रखे, दूसरों को गीतादि प्रवृत्तिसे व्याकुल यानी क्रोधादिके वश न होवे, देवकार्यको छोड़ दूसरे कर्त्तव्योंसे चित्तको हटाना चाहिए, राजकथादि विकथाओंको छोड़े, किसीके मर्मकी बात प्रकाश न करे, दूसरे को दुखदायी वचन न कहे, आत्महितकारी प्रामाणिक वचन बोले, जिसने मन, वचन, कायासे खोटे व्यापारोंका निषेध किया है, उसके भावसे निसिही होती है, और वही सुगति निबन्धन

होती है। पूजायोग्य पवित्र होकर उत्तम निर्दोष वस्त्र पहन कर आठ पुट वाले मुखकोशसे नाक और मुखकी भापको रोके। धूपादिकसे अपने अंगको वासित कर भावसे दूसरी निसिही कहता हुआ मूल गम्भारेमें प्रवेश करे। जयणा-विवेक पूर्वक जिन पूजा करे, पूजा करते समय शरीर न खुजावे, खेल खंखार न करे, केवल भगवानकी भक्तिमें ही चित्त तन्मय बनावे। प्रथम सुगन्ध युक्त जल पंचामृतसे भगवानको स्नान करावे। सुकुमाल अच्छे कोमल सुगन्ध युक्त वस्त्रसे भगवान का अंग लूहे। कपूर कस्तूरी मिश्रित शुद्ध केशर चन्दनका विलेपन करे शुभवर्ण, शुभ गन्धयुक्त जीवादि रहित निर्दोष गुलाब, चम्पा, चमेली, केवड़ा, जाई, जुही, मोगरादिक पुष्पोंसे पूजा करे दशांग धूप अगरबत्ती खेवे। मंगल दीप करे। अखण्ड उज्ज्वल अक्षतसे प्रभुके सम्मुख स्वस्तिक करे—उत्तम नैवेद्य चढ़ावे तथा फल चढ़ावे इत्यादि पूजाकी विधि आरती पर्यन्त रायपसेणी

ज्ञाता-धर्मकथा, जीवाभिगमादि सिद्धान्तोंमें लिखे मुजब करे। पीछे अन्तरंग भक्तिसे प्रभुके सम्मुख नाटक करे। जैसे देवेन्द्र, दानवेन्द्र, नारद, इन्होंने तथा उदायी राजाकी रानी प्रभावतीने, द्रौपदीने नाटक किया और रावण प्रमुख कई जीवोंने अष्टापदादि तीर्थोंके ऊपर नाटक करके तीर्थंकर-गोत्र उपार्जन किया, तैसे प्रभुके सम्मुख शङ्का रहित होके उत्तम पुरुष नाटक करे।

जल, चन्दन, पुष्पादिकसे पूजा करे, उसे अङ्गपूजा कहते हैं ओर प्रभुके सम्मुख नैवेद्य प्रमुख चढ़ावे उसे अग्रपूजा कहते हैं। प्रभुके सम्मुख शक्रस्तवादि गीत—गान नाटकादि करे उसे भाव-पूजा कहते हैं। पूजा करते समय तीन अवस्था विचारना चाहिए—पिण्डस्थ - पदस्थ - रूपातीत। इसमें पिण्डस्थके तीन भेद होते हैं—जन्मावस्था विचारना, राज्यावस्था विचारना, श्रमणावस्थाको विचारना। केवली अवस्थाको विचारना उसको पदस्थ अवस्था कहते हैं। निरंजन निराकार

भावको विचारना उसे रूपातीतावस्था कहते हैं। पूजा करते समय उपर्युक्त तीन अवस्थाओंको विचारना चाहिए। ऊर्द्ध—अधो-तिरछी दिशाको छोड़ कर प्रभु-सम्मुख ही नजर रखे। शुद्ध वर्णोंका उच्चारण करनेको वर्णशुद्धि, शुद्ध अर्थोंका अवलम्बन रक्खे उसे अर्थशुद्धि और जिनेश्वरके गुण विचारमें ही तल्लीन रहे उसे मनःशुद्धि कहते हैं। चैत्यवन्दन स्तवनादि करते समय तीन शुद्धियें रक्खे। योगमुद्रा, जिनमुद्रा, मुक्ताशुक्ति-मुद्रा इन तीन मुद्राओंको धारण करे। "नमुत्थुणं" पढ़ते समय योगमुद्रा, काउसग्ग करते समय जिन-मुद्रा, जयवियराय पढ़ते समय मुक्ताशुक्तिमुद्रा धारण करे। "जावंति चेइआइ" इत्यादि "इह संतो तत्थ संताइ" तक जिनवन्दन प्रणिधान, "जावंत केवि साहू-तिविहेण तिदंडविरयाणं" तक मुनिवन्दन प्रणिधान, "जयवियराय—आभवमखंडा" तक प्रार्थना - प्रणिधान चैत्यवन्दनमें होते हैं। सचित्त द्रव्य कुसुमादिक अपने पास जो होवे उसे

अलग रख दे (१) राजचिह्न, मुकुट, छत्र, खड्ग, चामर, पादुका आदि अचित वस्तु छोड़े, (२) मन एकाग्र रखे (३) एक पट्ट उत्तरासंग करना (४) जिनबिम्ब देखते ही "नमो भुवणबंधुणो" कह कर नमस्कार करे (५) पुरुष दाहिनी दिशामें बैठ कर और स्त्री बांई दिशामें बैठकर चैत्यवन्दन करे। जघन्य कमसे कम नव हाथ दूर, मध्यम नव हाथ से ऊपर और उत्कृष्ट साठ हाथ दूर बैठकर चैत्य वन्दन करे। यह जिन-मन्दिरकी सामान्य विधि कही। ओलीके प्रथम दिन स्नात्र पूजा, श्रीअरिहंत-पद - पूजा तथा अष्टप्रकारी पूजा आदि करें। पूजाके बाद आरती उतारें। फिर नव मन्दिरोंमें अथवा जहां नव मन्दिर न हों एक ही मन्दिरमें नव चैत्यवन्दन करें। फिर दोपहरका देव वंदन करें।

आयंबिल करनेसे पहिले स्थापनाजीके सामने पच्चक्खाण पारें। फिर चावलका आयंबिल करें। आयंबिल कर लेनेके बाद चैत्यवन्दन करें।

शेष कालका कर्तव्य

दिनमें प्रमादका सेवन न करे, विकथा न करे कषाय न करे। फिर संध्याको पडिलेहण करे, संध्या को तीसरी वार देव-वन्दन करे। देव-वन्दन करनेके बाद पानी नहीं पीना। संध्या समय आरती, धूप, दीप, आदिसे पूजा करे। श्रीसिद्धचक्र यन्त्रकी भी संध्याकाल धूपादिसे यथोचित पूजा करें। संध्या समय दैवसिक प्रतिक्रमण करें। फिर एक पहर रात्रि तक धर्मकथा करे।

प्रहररात्रि जाने पर संथारा पोरिसी सुने। संथारा विधि पर लक्ष्य रखकर उस प्रकार आचरण करे। श्रीपंच परमेष्ठि मंत्रका जाप करते हुए संथारा बिछानेकी जगह चरवलेसे प्रमार्जन कर संथारा, उत्तर पट्टा बिछाकर श्री अरिहंत प्रभुका ध्यान करता हुआ अल्प निद्रा करे।

दूसरे दिनकी विधि

पहले दिनकी विधि अनुसार ही जागृत होने से लेकर सब क्रिया करें। विशेष इसप्रकार है—

सिद्ध पदके आठ गुण हैं इसलिए आठ साथिये करें। आठ प्रदक्षिणाएं देकर आठ खमासमण देवें—

रूपातीत स्वभाव जे केवलदंसणनाणी रे।
ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुणखाणी रे॥
॥ २ ॥ वी० ॥

प्रदक्षिणा देते समय उपर्युक्त दोहा बोले।

सिद्ध पदके ८ गुण

१ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥
२ अनन्तदर्शनसयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥
३ अव्याबाधगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥
४ अनन्तचारित्रगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥
५ अक्षयस्थितिगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥
६ अरूपिनिरंजनगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥

७ अगुरुलघुगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥

८ अनन्तवीर्यगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥

यह आठ नमस्कार करके आठ लोगस्सका काउसग्ग करें फिर प्रगट लोगस्स बोले। "ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं" इस पदकी बीस मालाएं गुणें स्नात्र पूजाके बाद दूसरे सिद्ध पदकी पूजा करे। सिद्ध पदका वर्ण (ज्योति-स्वरूप होनेके कारण) लाल है अतः गेहूंकी रोटीका आयंबिल करें। बाकी सब विधि पहले दिनवत्

इति दूसरे दिनकी विधि

तीसरे दिनकी विधि

प्रथम दिनकी विधि अनुसार ही जागृत होने से लेकर सब क्रिया करें, विशेष इस प्रकार हैं।

आचार्य-पदके ३६ गुण हैं। इसलिए ३६ स्वस्तिक करें, नीचे लिखे दोहे बोलते हुए ३६ प्रदक्षिणा देकर ३६ खमासमण देवें—

दोहा

ध्यातां आचारज भला, महा नेत्र शुभ ध्यानी रे ॥
पंच प्रस्थाने आत्मा, आचारज होय प्राणी रे ॥
वीर० ॥ २ ॥

॥ आचार्य पदके ३६ गुण ॥

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंश्रीयुताय आचार्याय नमः ॥
३ युगप्रधानागमसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
६ धैर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ।
७ उपदेशगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१० शीलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
११ अविग्रहगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१२ अविकथकगुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

१३ अचपलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१४ प्रसन्नवदनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१५ क्षमागुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१६ ऋजुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१७ मृदुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१८ सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१९ द्वादशविधतपगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२० सप्तदशविधसंयमगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२२ शौचगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२३ अकिंचनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२५ अनित्यभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२६ अशरणभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२७ संसारस्वरूपभावनाभावकायश्री आचार्याय नमः
२८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३० अशुचिभावनाभावकायश्री आचार्याय नमः ॥

३१ आश्रवभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३२ संवरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३३ निर्जराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
३५ बोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय० ॥
३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥

ये छत्तीस नमस्कार करके ३६ लोगस्सका काउस्सग्ग करे फिर प्रगट लोगस्स बोले। "ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं" इस पदकी बीस मालाएं गुणे, स्नात्र पूजाके बाद तीसरे आचार्य पदकी पूजा करें। आचार्य पदका वर्ण पीला है अतः चनेकी दालका आयंबिल करें। बाकी सब विधि पहले दिन के समान।

चौथे दिनकी विधि

उपाध्याय पदके २५ गुण हैं इसलिए २५ साथिये करें। २५ प्रदक्षिणाएं देते हुए नीचे लिखा दोहा बोलते हुए ३६ खमासमण पूर्वक नीचे लिखे २५ गुणोंको वंदन करें।

दोहा

तप सज्झाए रत सदा, द्वादश अंग नो ध्याता रे।
उपाध्याय ते आत्मा, जगबन्धव जग भ्राता रे॥

॥ उपाध्याय पदके २५ गुण ॥

१ आचारांगसूत्रपठनगुणसंयुताय श्रीउपाध्याय।
२ सुयगडांगसूत्रपठनगुणसंयुताय श्रीउपाध्याय॥
३ ठाणांगसूत्रपठनगुणसंयुताय श्रीउपाध्याय॥
४ समवायांगसूत्रपठनगुणसंयुताय श्रीउपाध्याय॥
५ भगवतीसूत्रपठनगुणसंयुताय श्रीउपाध्याय॥
६ श्रीज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय॥
७ श्रीउपासकदशासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा०॥
८ श्रीअंतगडदशासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा०॥
९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा०।
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा०॥
११ श्रीविपाकसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय०॥
१२ उत्पादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय नमः॥
१३ आग्रायणीपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय०॥
१४ वीर्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय०॥

१५ अस्तिप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय० ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय० ॥
१७ सत्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय० ॥
१८ आत्मप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय० ॥
१९ कर्मप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय० ॥
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२१ विद्याप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय० ॥
२२ अविंध्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ।
२३ प्राणायामप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ।
२४ क्रियाविशालपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ।
२५ लोकबिंदुसारपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ।

ये २५ नमस्कार करके २५ लोगस्सका काउसग्ग करे, फिर प्रगट लोगस्स बोले। "ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं" इस पदकी बीस मालाएं गुण, स्नात्र पूजाके बाद उपाध्याय पदकी पूजा करें। उपाध्याय पदका वर्ण हरा होता में इसलिए मूंग की दालका आयंबिल करें। बाकी सब विधि पहले दिनके समान।

पांचवें दिनकी विधि

साधु पदके २७ गुण हैं इसलिए २७ साथिये करें। नीचे लिखा दोहा बोलते हुए २७ प्रदक्षिणा देकर २७ खमासमण देवें।

दोहा

अप्रमत्त जे नित रहे, नवि हरखे नवि सोचे रे।
साधु सुधा ते आतमा, शुं मुंडे शुं लोचे रे॥
॥ १ ॥ बी०

साधुपद के २७ गुण

१ प्राणातिपातविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः॥
२ मृषावादविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः॥
३ अदत्तादानविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः॥
४ मैथुनविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः॥
५ परिग्रहविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः॥
६ रात्रिभोजनविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः॥
७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः॥
८ अप्कायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः॥

९ तेउकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१० वाउकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१२ त्रसकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१४ बेइन्द्रियजोवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१५ तेइन्द्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१६ चौरिंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१७ पंचेन्द्रिजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१८ लोभनिग्रहकारकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२० शुभभावनाभावकाय श्रीसाधवे नमः ॥
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः
२२ संयमयोगयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरिषहसहनतत्पराय० ॥

२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्रीसाधवे नमः ॥

ये २७ नमस्कार करके २७ लोगस्सका काउसग्ग करें। फिर प्रगट लोगस्स बोलें। "ॐ ह्रीं नमो लोएसव्व साहूणं", इस पदकी बीस मालाएं गुणे। स्नात्र पूजाके बाद साधु पदका पूजन करें साधुका वर्ण काला है इसलिए उड़दकी दालका आयंबिल करें। बाकी सब विधि पहले दिनके समान करें।

छठे दिनकी विधि

दर्शन पदके ६७ गुण हैं, इसलिए ६७ साथिये करें। नीचे लिखा दोहा बोलते हुए ६७ प्रदक्षिणा देकर ६७ खमासमण देवें—

दोहा

शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशमे जे आवे रे ॥
दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम धरावे रे ॥

॥ दर्शन पदके ६७ भेद ॥

१ परमार्थसंस्तवरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥

२ परमार्थज्ञातृसेवनरूपसदर्शनाय नमः ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूपसदर्शनाय नमः ॥
४ कुदर्शनवर्जनरूपसदर्शनाय नमः ॥
५ शुश्रुषारूपसदर्शनाय नमः ॥
६ धर्मरागरूपसदर्शनाय नमः ॥
७ वैयावृत्त्यरूपसदर्शनाय नमः ॥
८ अर्हद्विनयरूपसदर्शनाय नमः ॥
९ सिद्धविनयरूपसदर्शनाय नमः ॥
१० चैत्यविनयरूपसदर्शनाय नमः ॥
११ श्रुतविनयरूपसदर्शनाय नमः ॥
१२ धर्मविनयरूपसदर्शनाय नमः ॥
१३ साधुवर्गविनयरूपसदर्शनाय नमः ॥
१४ आचार्यविनयरूपसदर्शनाय नमः ॥
१५ उपाध्यायविनयरूपसदर्शनाय नमः ॥
१६ प्रवचनविनयरूपसदर्शनाय नमः ॥
१७ दर्शनविनयरूपसदर्शनाय नयः ॥
१८ संसारे जिनसारमितिचिंतनरूपसदर्शनाय ॥
१९ संसारे जिनमतिसारमिति चिंतनरूपसदर्शनाय० ॥

२० संसारे जिनमतिस्थितसाध्वादिसारमितिचिंतन-
रूपसदर्शनाय नमः ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सदर्शनाय नमः ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सदर्शनाय नमः ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सदर्शनाय नमः ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषणरहिताय सदर्शनाय नमः ॥
२५ तत्परिचयदूषणरहिताय सदर्शनाय नमः ॥
२६ प्रवचनप्रभावकरूपसदर्शनाय नमः ॥
२७ धर्मकथाप्रभावकरूपसदर्शनाय नमः ॥
२८ वादिप्रभावकरूपसदर्शनाय नमः ॥
२९ नैमित्तकप्रभावकरूपसदर्शनाय नमः ॥
३० तपस्विप्रभावेकरूपसदर्शनाय नमः ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिविद्याभृत्प्रभावकरूपसदर्शनाय नमः॥
३२ चूर्णांजनादिसिद्धप्रभावकरूपसदर्शनाय नमः ॥
३३ कविप्रभावकरूपसदर्शनाय नमः ॥
३४ जिनशासने कौशलभूषणरूपसदर्शनाय नमः ॥
३५ प्रभावनाभूषणरूपसदर्शनाय नमः ॥
३६ तीर्थसेवाभूषणरूपसदर्शनाय नमः ॥

३७ धैर्यभूषणरूपसदर्शनाय नमः ॥
३८ जिनशासने भक्तिभूषणरूपसदर्शनाय नमः ॥
३९ उपशमगुणरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
४० संवेगगुणरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
४१ निर्वेदगुणरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
४२ अनुकंपागुणरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
४३ आस्तिक्यगुणरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
४४ परतीर्थकादिवंदनवर्जनरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
४५ परतीर्थकादिनमस्कार वर्जनरूपश्रीसदर्शनाय० ॥
४६ परतीर्थकादिआलापवर्जनरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
४७ परतीर्थकादिसंलापवर्जनरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
४८ परतीर्थकादिअशनादिदानवर्जनरूपश्रीसदर्श० ॥
४९ परतीर्थकादिगंधपुष्पादिप्रेषणवर्जनरूपश्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नमः ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नमः ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नमः ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नमः ॥
५४ कांतारवृत्त्याकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नमः ॥

५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्तश्रीसदर्शनाय नमः
५६ सम्यक्त्वं चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिं० श्री०॥
५७ सम्यक्त्वं धर्मपुरस्य द्वार मिति चिं० श्रीस०॥
५८ सम्यक्त्वं धर्मस्य प्रतिष्ठान मिति चिं० श्रीस०॥
५९ सम्यक्त्वं धर्मस्याधार मिति चिं० श्रीस०॥
६० सम्यक्त्वं धर्मस्य भाजनमिति चिं० श्रीस०॥
६१ सम्यक्त्वं धर्मस्य निधिसंनिभमिति चिं० श्री०॥
६२ अस्ति जीव इति [illegible]
६३ स च जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्तश्री०।
६४ स च जीवः कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान-
युक्तश्रीसदर्शनाय नमः ॥
६५ स च जीवः कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान-
स्थानयुक्तश्रीसदर्शनाय नमः ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयुक्त०।
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धानस्थानयुक्त०

ये ६७ खमासमण देकर, ६७ लोगस्सका काउसग्ग करें, फिर प्रगट लोगस्स बोलें। 'ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स' इस पदकी बीस मालाएं गुणें।

दर्शन पद का वर्ण सफेद है इसलिये चावल का आयंबिल करें। स्नात्र के बाद दर्शन पदका पूजन करें। बाकी सब विधि प्रथम दिनके समान।

सातवें दिन की विधि

ज्ञान पद के ५१ भेद हैं इसलिये ५१ साथिये करें। फिर नीचे लिखा दोहा बोलते हुए प्रदक्षिणा देकर ५१ खमासमण देवें।

दोहा

ज्ञाना वरणीय जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थायरे।
तो हुए एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायरे॥ १ ॥
वीर० ॥ २ ॥

॥ ज्ञानपदके ५१ भेद ॥

१ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

६ रसनेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
७ घ्राणेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
८ चक्षुरिंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
९ श्रोत्रेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
१० मनोऽर्थावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
११ स्पर्शनेंद्रियईहामतिज्ञानायनमः ॥
१२ रसनेंद्रियईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१३ घ्राणेंद्रियईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१४ चक्षुरिंद्रियईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१५ श्रोत्रेंद्रियईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१६ मन ईहामतिज्ञानाय नमः ॥
१७ स्पर्शनेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
१८ रसनेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
१९ घ्राणेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२० चक्षुरिंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२१ श्रोत्रेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२२ मनोऽपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२३ स्पर्शनेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥

२४ रसनेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥

२५ घ्राणेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥

२६ चक्षुरिंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥

२७ श्रोत्रेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥

२८ मनोधारणामतिज्ञानाय नमः ॥

२९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३० अनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३१ संज्ञिश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३२ असंज्ञिश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३३ सम्यक्श्रुतज्ञानाय नमः ।

३४ मिथ्याश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३५ सादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३६ अनादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३७ सपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३८ अपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३९ गमिकश्रुतज्ञानाय नमः ॥

४० अगमिकश्रुतज्ञानाय नमः ॥

४१ अंगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः ॥

४२ अनंगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः ॥

४३ अनुगामिअवधिज्ञानाय नमः ॥

४४ अननुगामिअवधिज्ञानाय नमः ॥

४५ वर्धमानअवधिज्ञानाय नमः ॥

४६ हीयमानअवधिज्ञानाय नमः ॥

४७ प्रतिपातिअवधिज्ञानाय नमः ॥

४८ अप्रतिपातिअवधिज्ञानाय नमः ॥

४९ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥

५० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥

५१ लोकालोकप्रकाशश्रोकेवलज्ञानाय नमः ॥

ये ५१ खमासमण देकर, ५१ लोगस्स का काउसग्ग करें फिर प्रगट लोगस्स बोलें। 'ॐ ह्रीं नमो नाणस्स' इस पद की बीस मालाएं गुणें। स्नात्र पूजा के बाद ज्ञान पद की पूजा करें। ज्ञान पद का वर्ण सफेद है इसलिये चावल का आयंबिल करें। बाकी विधि पहले दिन के समान करें।

आठवें दिन की विधि

चारित्र पद के ७० भेद हैं इसलिये ७० साथिये करें फिर नीचे लिखा दोहा बोलते हुए ७० प्रदक्षिणा देकर ७० खमासमण देवें।

दोहा

जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभाव मां रमतोरे।
लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोह वणे नवि भमतोरे ॥१॥
\वीर० ॥ २ ॥

॥ चारित्रपदके ७० भेद ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
२ मृषावादविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
३ अदत्तादानविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
४ मैथुनविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
५ परिग्रहविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
६ क्षमाधर्मरूपचारित्राय नमः ॥

नव० ५

७ आर्जवधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
८ मृदुताधर्मरूपचारित्राय नमः ॥

९ मुक्तिधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१० तपोधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
११ संयमधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१२ सत्यधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१३ शौचधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१४ अकिंचनधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१५ बंभधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१६ पृथ्वीरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
१७ उदकरक्षासयमचारित्राय नमः ॥
१८ तेउरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
१९ वाउरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२१ बेइंद्रियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२२ तेइंद्रियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२३ चौरिंद्रियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२४ पंचेंद्रियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२५ अजीवरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२६ प्रेक्षासंयमचारित्राय नमः ॥

२७ उपेक्षासंयमचारित्राय नमः ॥

२८ अतिरिक्तवस्त्रभक्तादिपरठणत्यागरूपसंयम० ॥

२९ प्रमार्जनरूपसंयमचारित्राय नमः ॥

३० मनःसंयमचारित्राय नमः ॥

३१ वाक्संयमचारित्राय नमः ॥

३२ कायासंयमचारित्राय नमः ॥

३३ आचार्यवैयावृत्त्यरूपसंयमचारित्राय नमः ॥

३४ उपाध्यायवैयावृत्त्यरूपसंयमचारित्राय नमः ॥

३५ तपस्विवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

३६ लघुशिष्यादिवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

३७ ग्लानसाधुवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

३८ साधुवैयावृत्यरूपचारित्राय नमः ॥

३९ श्रमणोपासकवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

४० संघवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

४१ कुलवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

४२ गणवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

४३ पशुपंडगादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्तिचारित्रा० ॥

४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः

४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥

४६ स्त्रीअंगोपांगनिरीक्षणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय० |

४७ कुड्यंतरस्थितस्त्रीहावभावश्रवणवर्जनब्रह्मगुप्ति०

४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नम

४९ अतिसरसआहारवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः

५० अतिआहारकरणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः

५१ अंगविभुषावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥

५२ अनशनतपोरूपचारित्राय नमः ॥

५३ ऊनोदरीतपोरूपचारित्राय नमः ॥

५४ वृतिसंक्षेपतपोरूपचारित्राय नमः ॥

५५ रसत्यागतपोरूपचारित्राय नमः ॥

५६ कायक्लेशतपोरूपचारित्राय नमः ॥

५७ संलेखनातपोरूपचारित्राय नमः ॥

५८ प्रायश्चित्ततपोरूपचारित्राय नमः ॥

५९ विनयतपोरूपचारित्राय नमः ॥

६० वेयावच्चतपोरूपचारित्राय नमः ॥

६१ सज्झायतपोरूपचारित्राय नमः ॥

६२ ध्यानतपोरूपचारित्राय नमः ॥

६३ उपसर्गतपोरूपचारित्राय नमः ॥

६४ अनंतज्ञानसंयुक्तचारित्राय नमः ॥

६५ अनंतदर्शनसंयुक्तचारित्राय नमः ॥

६६ अनंतचारित्रसंयुक्तचारित्राय नमः ॥

६७ क्रोधनिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥

६८ माननिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥

६९ मायानिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥

७० लोभनिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥

ये ७० नमस्कार कर के ७० लोगस्सका काउसग्ग करे, फिर प्रगट लोगस्स कहे। 'ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स' इस पद की बीस मालाएं गुणें। स्नात्र पूजा के बाद चारित्र पद की पूजा करें। चारित्र पद का वर्ण सफेद है इसलिये चावल का आयंबिल करें। बाकी विधि प्रथम दिन के समान करें।

नवमें दिन की विधी

तपपद के ५० भेद हैं इसलिये ५० साथिये

करें फिर नीचे लिखा दोहा बोलते हुए ५० प्रदक्षि-णायें देकर ५० खमासमण देवें।

दोहा

इच्छारोधे संवरी, परिणति समता योगेरे।
तपते एहिज आतमा, वर्त्ते निज गुण भोगेरे ॥१॥

॥ तपपदके ५० भेद ॥

१ यावत्कथिकतपसे नमः ॥
२ इत्वरतपोभेदतपसे नमः ॥
३ बाह्यऊनोदरीतपोभेदतपसे नमः ॥
४ अभ्यंतरऊनोदरीतपोभेदतपसे नमः ॥
५ द्रव्यतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
६ क्षेत्रतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
७ कालतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
८ भावतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
९ कायक्लेशतपोभेदतपसे नमः ॥
१० रसत्यागतपोभेदतपसे नमः ॥
११ इन्द्रियकषाययोगविषयकसंलीनतातपसे नमः ॥

१२ स्त्रीपशुपंडकादिवर्जितस्थानअवस्थितसंलीनता०

१३ आलोयणप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

१४ पडिक्कमणप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

१५ मिश्रप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

१६ विवेकप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

१७ उपसर्गप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

१८ तपःप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

१९ छेदप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

२० मूलप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

२१ अनवस्थितप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

२२ पारंचियप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

२३ ज्ञानविनयरूपतपसे नमः ॥

२४ दर्शनविनयरूपतपसे नमः ॥

२५ चारित्रविनयरूपतपसे नमः ॥

२६ गुर्वादिकमनोविनयरूपतपसे नमः ॥

२७ वचनविनयरूपतपसे नमः ॥

२८ कायविनयरूपतपसे नमः ॥

२९ उपचारकविनयरूपतपसे नमः ॥

३० आचार्यवेयावच्चतपसे नमः ॥

३१ उपाध्यायवेयावच्चतपसे नमः ॥

३२ साधुवेयावच्चतपसे नमः ॥

३३ तपस्विवेयावच्चतपसे नमः ॥

३४ लघुशिष्यादिवेयावच्चतपसे नमः ॥

३५ ग्लानसाधुवेयावच्चतपसे नमः ॥

३६ श्रमणोपासकवेयावच्चतपसे नमः ॥

३७ संघवेयावच्चतपसे नमः ॥

३८ कुलवेयावच्चतपसे नमः ॥

३९ गणवेयावच्चतपसे नमः ॥

४० वायणातपसे नमः ॥

४१ पृच्छनातपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षातपसे नमः ॥

४४ धर्मकथातपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥

४७ धर्मध्यानचिंतनतपसे नमः ॥

४८ शुक्लध्यानचिंतनतपसे नमः ॥

४९ बाह्यउपसर्गतपसे नमः ॥

५० अभ्यंतरउपसर्गतपसे नमः ॥

ये ५० नमस्कार करके ५० लोगस्स का काउसग्ग करें, फिर प्रगट लोगस्स कहें। 'ॐ ह्रीं नमो तवस्स' इस पद की बीस मालाएं गुणें। स्नात्र पूजा के बाद चारित्र पद की पूजा करें। तप पद का वर्ण सफेद है इसलिये चावल का आयंबिल करें। बाकी विधि पहले दिन के समान करें।

पारणे के दिन की विधि

प्रातःकाल उठकर प्रतिक्रमण, पड़िलेहण, देव वन्दन तक की विधि पूर्ववत् करके एकासणे या बियासणे का पच्चक्खाण करें। स्नात्र-अष्ट प्रकारी पूजा करें। फिर नव साथिये करें।

॥ श्री नवपद वासक्षेप पूजा ॥

अरिहंत पद पूजा ॥१॥

तीरथ पति अरिहा नमूं, धर्म धुरन्धर धीरो जी।
देशना अमृत वरसता, निज वीरज वड़ वीरो जी ॥

वर अखय निर्मल ज्ञान भासन, सर्व भाव प्रकाशता।
निज शुद्ध सत्ता आत्म भावे, चरण थिरता वासता।
जिन नाम कर्म प्रभाव अतिशये, प्रातिहारज शोभता।
जग जंतु करुणावंत भगवंत, भविक जन ने थोभता॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय अर्हते भगवते वासं जयामहे स्वाहा॥

सिद्धपद पुजा॥ २॥

सकल करम मल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी।
अव्याबाध प्रभुता मयी, आतमसंपति भूपो जी॥
जे भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणे करी;
स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे, गुण अनन्ता आदरी।
स्व स्वभाव गुणपर्याय परिणति, सिद्धि साधन पर भणी,
मुनिराज मानस हंस समवड़, नमो सिद्ध महागुणो।२।
ॐ ह्रीं परमात्मने० सिद्धाय भगवते वासं जयामहे स्वाहा

आचार्य पद पुजा॥३॥

आचरज मुनिपति गणी,
गुण छत्तीसे धामो जी।

चिदानन्द रस स्वादता,
परभावे निक्कामो जी ॥१॥
निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन;
साध्य निज निरधारथी;
वर ज्ञान दरसन चरण वीरज;
साधना व्यापारथी।
भवि जीव बोधक तत्त्व शोधक;
सयल गुण सम्पतिधरा,
संवर समाधि गत उपाधि,
दुविध तप गुण आगरा ॥२॥
ॐ ह्रीं परमात्मने॰ आचार्याय भगवते वा संजयामहे स्वाहा।

उपाध्याय पद पूजा ॥ ४ ॥

खंति जुआ मुत्ति जुआ,
अज्जव मद्दव जुत्ता जी।
सच्चं सोयं अकिंचणा,
तव संजम गुण रत्ता जी ॥१॥
जे रम्या ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता,
समिति समिता श्रुतधरा,

स्याद्वाद वादे तत्त्व वादक
आत्म पर विभजन करा।
भवभीरू साधन धीर शासन;
वहन धोरी मुनिवरा,
सिद्धान्त वायण दान समरथ,
नमो पाठक पद धरा ॥२॥

ॐ ह्रीं परमात्मने० उपाध्यायाय भगवते वासंयजामहे स्वाहा।

साधु पद पूजा ॥ ५ ॥

सकल विषय विष वारिने,
निःकामी निःसंगी जी।
भवदव ताप शमावता,
आतम साधन रंगी जी ॥१॥
जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे;
देह निर्मम निर्मदा,
काउसग्ग मुद्रा धीर आसन;
ध्यान अभ्यासी सदा।
तपतेजे दीपे कर्म झीपे;
नैव छीपे पर भणी,

मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन
बन्धु प्रणमूं हित भणी ॥ २ ॥
ॐ ह्रींपरमात्मने०साधवेभगवतेवासंयजामहे स्वाहा ॥

दर्शन पद पूजा ॥ ६ ॥

सम्यग् दर्शन गुण नमो,
तत्त्व प्रतीत स्वरूपो जी
जसु निरधार स्वभाव छे,
चेतन गुण जे अरूपो जी ॥१॥
जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे;
सयल पर ईहा टले,
निज शुद्ध सत्ता प्रगट अनुभव;
करण रुचिता ऊछले।
बहुमान परिणति वस्तु तत्त्वे,
अहव तसु कारण पणे,
निज साध्य दृष्टे सर्व करणी,
तत्त्वना सम्पति गिणे ॥२॥
ॐ ह्रींपरमात्मने०दर्शनायभगवतेवासंयजामहेस्वाहा ॥

ज्ञान पद पूजा ॥ ७ ॥

भव्य! नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावे जी।
पर्याय धर्म अनन्तता, भेदाभेद स्वभावे जी ॥ १ ॥
जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोध भाव विलच्छना
मति आदि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लच्छना।
स्याद्वाद संगी तत्त्व रंगी, प्रथम भेद अभेदता;
सविकल्पने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥२॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० ज्ञानाय भगवते वासं यजामहेस्वाहा

चारित्र पद पूजा ॥ ८ ॥

चारित्र गुण वलि वलि नमो,
तत्त्व रमण जसु मूलो जी।
पर रमणीयपणुं टले,
सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥१॥
प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम,
तत्त्व थिरता दम मयी,
शुचि परम खंति मुत्ति दश पद,
पञ्च संवर उपचयी।

सामायिकादिक भेद धर्मे,
यथाख्याते पूर्णता,
अकषाय अकलुष अमल उज्ज्वल,
काम कश्मल चूर्णता ॥२॥

ॐ ह्रींपरमात्मने• चारित्रायभगवतेवासंयजामहेस्वाहा॥

तपः पद पूजा ॥ ९ ॥

इच्छा रोधन तप नमो,
बाह्य अभ्यन्तर भेदे जी।
आतम सत्ता एकता,
परपरिणति उच्छेदे जी ॥१॥
उच्छेद कर्म अनादि संतति,
जेह सिद्ध पणुं वरे,
योग संगे आहार टाली,
भाव अक्रियता करे।
अन्तर मुहूरत तत्त्व साधे,
सर्व संवरता करी,
निज आत्म सत्ता प्रगट भावे,
करो तप गुण आदरी ॥२॥

कलश

इम नवपद गुण मण्डलं, चउ निक्षेप प्रमाणो जी।
सात नये जे आदरे सम्यग् ज्ञानने जाणो जी॥ १ ॥
निरधासेती गुणी गुणनो करे जे बहुमान ए;
तसु कारण ईहा तत्त्व रमणे; थाये निर्मल ध्यान ए
इम शुद्ध सत्ता भल्यो चेतन; सकल सिद्धि अनुसरे;
अक्षय अनन्त महन्त चिदघन; परम आनन्दता वरे।२
इम सयल सुखकर; गुण पुरन्दर; सिद्ध चक्र पदावली
सवि लद्धि विज्झा सिद्धि मन्दिर;
भविक ! पूजो मनरली।
उवज्झाय वर श्रीराज सागर; ज्ञानधर्म सुराजता.
गुरु दीपचन्द; सुचरण सेवक;
देवचन्द्र सुशोभता ॥३॥
ॐ ह्रींपरमात्मने॰तपसेभगवतेवासंयजामहेस्वाहा ॥

इति श्रीनवपद वासक्षेप पूजा समाप्तः।

उपाध्यायजी श्री देवचन्द्रजी महाराज कृत

* स्नात्र पूजा *

अथ मङ्गलाचरणम्

नमो अरिहंताणं, नमोसिद्धाणं, नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वासाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं। नमऽर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः।

पांखड़ी गाथा—

चउतीसे अतिसय जुओ, वचनातिसय जुत्त।
सो परमेसर देखी भवि, सिंहासण संपत्त ॥१॥

ढाल—सिंहासण बैठा जग भाण, देखी भविअण गुण मणि खाण। जे दीठे तुज निम्मल नाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, तोरा चरण कमल सेवे चोसठ इंदा। पूजो रे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा, कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं परमात्माने, अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय कुसुमांजलिं यजामहे स्वाहा ।

यह पढ़ कर कुसुमांजली चढ़ाइजे, भगवन्त के चरण में टीकी दीजै, फिर हाथमें कुसुमांजली लेकर 'नमोऽर्हत्सिद्धा० कही पढे

गाथा--जे निजगुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त।
सुह पुग्गल आरोपतां, ज्योति सुरंग निरत्त ॥१॥

ढाल—जे निज आतम गुण आनंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी । जे परमेश्वर निज पद लीन, पूजो प्रणमो भव्य ! अदीन ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा, तोरा चरण-कमल चोवीस, पूजो रे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा, कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा ॥२॥

ॐ ह्रीं० । कुसुमाजली चढ़ाईजे, गोडा (जानु) में टीकी दीजे, फिर हाथ में कुसुमांजली लेके 'नमोऽर्हत्सिद्धा०' कही पढ़े—

गाथा—निम्मल नाण पयासकर, निम्मम गुण संपन्न।
निम्मल धम्मोवएसकर, सो परमप्पा धन्न ॥१॥

ढाल—लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी, परमानन्द तणी निसाणी, तसु

भगते मुज मति ठहराणी ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा, तोरा चरण कमल चोवीस, पूजो रे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा, कुसुमाञ्जलि मेलो नेमि जिणंदा ॥२॥

ॐ ह्रीं० । कुसुमाञ्जलि चढाइजे, दोनों काण्डे (हाथे) टीकी दीजे । फिर कुसुमाजली लेकर 'नमोऽर्हत०' कहके पढ़े—

गाथा--जे सिद्धा सिज्झंति जे, सिज्झस्संति अनंत ।
जसु आलंबन ठविय मन, सो सेवो अरिहंत ॥१॥

ढाल—शिव सुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले । उत्तम साधन मार्ग दिखाले, इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥१॥ कुसुमाञ्जलि मेलो पार्श्व जिणंदा तोरा चरण कमल चोवीस, पूजो रे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा, कुसुमाञ्जलि मेलो पार्श्व जिणंदा ॥२॥

ॐ ह्रीं० । कुसुमाञ्जली चढ़ावे, दोनों खांधे (कंधे) टीकी दीजे । बाद कुसुमाञ्जली लेकर 'नमोऽर्हत्०' कही कहे—

गाथा--सम्मदिट्ठी देस जय, साहु साहुणी सार ।
आचारज उवज्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥१॥

ढाल——चउविह संघे जे मन धार्यो, मोक्ष तणो कारण निरधार्यो। विविह कुसुमवर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमन्त ठवेवी ॥१॥ कुसुमाञ्जलि मेलो वीर जिणंदा, तोरा चरण कमल चोवीस, पूजो रे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस, जिणंदा, कुसुमाञ्जलि मेलो वीर जिणंदा ॥२॥

ॐ ह्रीं०। कुसुमां० चढ़ाके, मस्तकमे टीकी दीजे। 'नमोऽर्हत्सिद्धा' कहके प्रभुजी के चमर वींजते हुए आगे का पाठ बोले।

वस्तु छंद--सयल जिनवर सयल जिनवर, नमिय मनरंग। कल्याणक विहि संठविय, करिय सुधम्म सुपवित्त। सुन्दर सय इक सत्तरि तित्थंकर। इक्क समे विहरंत महियल। चवण समे इकवीस जिण, जम्म समै इकवीस। भत्तिय भावे पूजिया, करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ ढाल—इक दिन अचिरा हुलरावती—एदेशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या, जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या। तजि इन्द्रिय सुख आशंसना करि थानक वीसनी सेवना ॥१॥ अति राग प्रशस्त

प्रभावता, मन भावना एहवी भावता। सवि जीव करुं शासन रसी, इसी भावदया मन उल्लसी ॥२॥ लही परिणाम एहवूं भलूं, निपजावी जिन पद निरमलूं। आयु बंध विचे इक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ तिहांथी चविय लहे नर भव उदार, भरते तिम ऐरवतेज सार। महाविदेह विजय प्रधान, मध्य खण्डे अवतरे जिन निधान ॥४॥

ढाल—पुण्ये सुपनह देखे, मनमें हर्ष विशेषे। गजवर उज्वल सुन्दर, निर्मल वृषभ मनोहर ॥१॥ निर्भय केसरी सिंह, लक्ष्मी अतिही अबीह। अनुपम फूलनी माल, निर्मल शशि सुकुमाल ॥२॥ तेजे तरणि अति दीपे, इन्द्रध्वजा जग जीपे। पूरण कलश पंडूर, पद्मसरोवर पूर ॥३॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण सायर। बारमे भवन विमान, तेरमें रत्न निधान ॥४॥ अग्नि शिखा निर्धूम, देखे माताजी अनुपम। हरखी राय ने भाषे, राजा अर्थ प्रकाशे ॥५॥ जगपति जिनवर सुखकर, होसे पुत्र मनोहर। इन्द्रादिक जसु

नमसे, सकल मनोरथ फलसे ॥६॥

वस्तु छंद–पुण्य उदय पुण्य उदय, उपना जिणनाह। माता तब रयणी समे, देखि सुपन हरखंत जागिय। सुपन कही निज कंत ने, सुपन अरथ सांमलो सोभागीय। त्रिभुवन तिलक महा-गुणी, होसे पुत्र निधान, इन्द्रादिक जसु पाय नमी, करसे सिद्धि विधान ॥१॥

ढाल —चन्द्रावलानी—

सोहमपति आसन कंपीयो, देई अवधि मन आणंदीयो। मुझ आतम निर्मल करण काज, भव जल तारण प्रगट्यो जहाज ॥१॥ भव अडवी पारग सत्थवाह, केवल नाणाइय गुण अगाह। शिव साधन गुण अंकुर जेह, कारण उलट्यो आषाढ़ि मेह ॥२॥ हरखे विकसे तब रोमराय, वलयादिकमां निज तनु न माय। सिंहासनथी उठ्यो सुरिन्द, प्रणमन्तो जिण आनन्द कन्द ॥३॥ सग अड पय सामो आवी तत्थ, करी अञ्जलि प्रणमिय मत्थ। मुख भाखे ए क्षण आज सार,

तिय लोय पहु दीठो उदार ॥४॥ रे रे ! निसुणो सुरलोय देव !, विषयानल तापित तुम सवेव। तसु शान्ति करण जलधर समान, मिथ्या विष चूरण गरुडवान ॥५॥ ते देव जगतारण समत्थ, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ। इम जम्पी शक्रस्तव करेवि, तब देव देवी हरखे सुणेवि ॥६॥ गावे तब रंभा गीत गान, सुरलोक हुओ मंगल निधान। नर क्षेत्रे आरज वंश ठाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥७॥ पिता माता घरे उच्छव अशेष, जिन शासन मङ्गल अति विशेष। सुरपति देवादिक हर्ष संग, संयम अर्थी जन ने उमङ्ग ॥८॥ शुभ वेला लगने तीरथ नाथ, जन्म्या इन्द्रादिक हर्ष साथ। सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाई वधाई थई अतीव ॥९॥

फूल व अक्षत से वधावे, तीन प्रदक्षिणा देवे और फिर शक्रस्तव कहै या तीन खमासमण देके 'जयउ[1] सामिय०' अथवा

१—तपगच्छमें जगचिंतामणि तथा खरतर गच्छमें जयउ सामियकी चैत्यवन्दन करनेकी विधि है।

जगचिंतामणि चैत्यवन्दन "जयवीयराय० आभवमखंडा" तक करे। पीछे अपने दाहिने हाथ में मोली बाधे। तथा केशर का साथिया करे तथा धूप खेवे।

ढाल—श्रीतीर्थपतिनो कलश मज्जन, गाइये सुखकार; नर खित्त मंडण दुह विहंडण, भविक मन आधार। तिहां राव राणा हर्ष उच्छव, थयो जग जयकारः दिशि कुमरि अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ष अपार ॥१॥ निय अमर अमरी संग कुमरी, गावती गुण छन्दः जिन जननि पासे आवी पहोंती, गहगहती आणन्द। हे माय! तें जिनराज जायो, शचि[1] वधायो रम्म; अम जम्म निम्मल करण कारण, करिस सूईकम्म ॥२॥ तिहां भूमि शोधन, दीप दर्पण, वायवींजण धार; तिहां करिय कदली गेह जिनवर, जननि मज्जनकार। वर राखड़ी जिन पाणी बांधी, दिये इम आसीस; जुग कोड़ाकोड़ी चिरंजीवो, धर्मदायक ईस ॥३॥

॥ ढाल इकवीसानी ॥

जग नायक जी, त्रिभुवन जन हित कार ए;

१—शचि शब्दका अर्थ इन्द्राणी होता हैं।

परमातमजी, चिदानन्द घन सार ए। जिण रयणी जी, दश दिशि उज्ज्वलता धरे; शुभ लगने जी, ज्योतिष चक्र ते संचरे। जिन जनम्याजी, जिण अवसर माता घरे; तिण अवसरजी, इन्द्रासन पिण थरहरे ॥१॥

त्रोटक—थरहरे आसण इन्द्र चिन्ते, कवण अवसर ए बन्यो; जिन जन्म उच्छव काल जाणी, अतिही आनन्द ऊपन्यो। निज सिद्धि सम्पति हेतु जिनवर, जाणि भगते ऊमह्यो; विकसित वदन प्रमोद वधते- देवनायक गहगह्यो ॥१॥

ढाल—तव सुरपति जी घंटानाद करावए, सुरलोकेजी घोषणा एह दिरावए। नरखेत्रे जी जिनवर जन्म हुवो अछे। तसु भगते जी सुरपति मन्दर गिरि गच्छे ॥१॥

त्रोटक—गच्छेति मन्दर शिखर ऊपर भवन जीवन जिन तणो, जिन जन्म उच्छव करण कारण आवजो सवि सुरगणो! तुम शुद्ध समकित थास्ये निर्मल देवाधिदेव निहालतां; आपणा पातिक

सर्व जास्ये, नाथ चरण पखालतां ॥२॥

ढाल—इम सांभली जी, सुरवर कोड़ी बहु मिली; जिन वन्दन जी, मन्दरगिरि साहमी चली। सोहमपतिजी, जिन जननि घर आविया; जिन जी वन्दी स्वामी वधाविया ॥१॥

त्रोटक—वधाविआ जिनवर हर्ष बहुले धन्य हुं कृत पुण्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए। हे जगतजननी! पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वर करी, उत्संग तुमचे वलिय थापिस आत्मा पुण्ये भरी ॥१॥

ढाल—सुरनायक जी जिन निज कर कमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमाये स्तव्या। नाटक विधि जी तब बत्तीस आगल वहे, सुर कोड़ी जी जिन दरिसण ने ऊमहे ॥ १ ॥

त्रोटक—सुर कोड़ा कोड़ी नाचती वलि नाथ शचि[1] गुण गावती, अप्सरा कोड़ी हाथ जोड़ी हाव

१—इन्द्राणी

भाव दिखावती। जय जयो तूं जिनराज ! जगगुरु ! एम दे असीस ए, अम त्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥४॥

ढाल—सुर गिरिवरजी पांडुक वनमें चिहुं दिसे, गिरि सिल पर जी सिंहासन सासथ वसे। तिहां आणो जी शक्रे जिन खोले ग्रह्या, चउसठ्ठे जो तिहां सुरपति आवी रह्या ॥१॥

त्रोटक—आविया सुरपति सर्व भगते कलश श्रेणि बणाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्वे वस्तु अणाव ए। अच्चुयपति तिहां हुकम कीनो देव कोड़ाकोड़ीने, जिन मज्जनारथ नीर लावो सवे सुर कर जोड़ी ने ॥१॥

"शान्ति ने कारणे इन्द्र कलशा भरे" ए देशी।

ढाल—आत्म साधन रसी देव कोड़ी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी। पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई, तीर्थ जल अमल लेवा भणी ते गई। जाति अड़ कलश करि सहस अट्ठोत्तरा, छत्र चामर सिंहासण शुभतरा। उपगरण पुप्फ-

चंगेरि पमुहा सवे, आगमे भासिया तेम आणी ठवे। तीर्थजल भरिय करि कलश करि देवता, गावता भावता धर्म उन्नतिरता। तिरिय नर अमर ने हर्ष उपजावता, धन्य अम शक्ति शुचि भक्ति इम भावता। समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिषे भक्ति जल सींचता। मेरु सिहरोवरे सर्व आव्या वही, शक्र उत्संग जिन देखि मन गहगही ॥१॥

गाथा—हंहो देवा हंहो देवा ! अणाइ कालो अदिट्ठ पुव्वो। तिलोय तापणो तिलोय बंधु मिच्छत्त मोह विद्धंसणो। अणाइ तिण्हा विणासणो देवाहि देवो दट्ठव्वो हियय कामेहिं।

ढाल—एम पभणंत वण भवण जोईसरा, देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा। केवि कप्पट्ठिया केवि मित्ताणुगा, केई वर रमणी वयणेण अइ उच्छुगा ॥१॥

वस्तु—तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय, इन्द्र आदेश। कर जोड़ी सवि देवगण, लेई कलश

आदेश पामिय। अद्भुत रूप स्वरूप जुय, कवण एह उच्छंगे सामिय!। इन्द्र कहे जगतारणो पारग अम्हपरमेस। नायक दायक धम्म निहि, करिये तसु अभिसेस॥

"तीर्थ कमलदल उदक भरीने, पुष्कर सागर आवे" ए देशी।

ढाल—पूर्ण कलश शुचि[1] उदकणी धारा, जिनवर अंगे नामे। आतम निर्मल भाव करंता, वधते शुभ परिणामे॥ अच्च्युतादिक सुरपति मज्जन लोकपाल लोकान्त। सामानिक इन्द्राणी पमुहा, इम अभिषेक करंत॥१॥

गाथा—तब ईशाण सुरिंदो सक्कं, पभणेइ करिय सुपसाओ। तुम्ह अंके महन्नाहो, खिण-मित्तं अम्ह अप्पेह॥१॥ ता सक्किंदो पभणइ, साहम्मिवच्छलम्मि बहुलाहो, आणा एवं तेणं, गिण्हह होउ कयत्था भो॥२॥ (कलश ढालें)

ढाल—सोहम सुरपति वृषभ रूप करि, न्हवण करे प्रभु अंगे। करिय विलेपन पुष्पमाल

१—पवित्र

ठवि, वर आभरण अभंगे, सो० ॥१॥ तव सुरपति बहु जय जय रव करि, नाचे धरि आणन्द । मोक्ष मारग सारथपति पाम्यो, भांजस्यूं हिव भव फंद, सो० ॥२॥ कोड़ बत्तीस सोवन्न उवारी, वाजंते वरनाद । सुरपति संघ अमर श्री प्रभुने जननीने सुप्रसाद, सो० ॥३॥ आणी थापी एम पयंपे, अम्ह निस्तरिया आज । पुत्र तुमारो धणी अमारो तारण तरण जिहाज, सो० ॥४॥ मात ! जतन करि राखज्यो एहने, तुम सुत अम आधार । सुरपति भक्ति सहित नन्दीश्वर, करे जिन भक्ति उदार, सो० ॥५॥ निय निय कप्प गया सहु निर्ज्जर, कहतां प्रभु गुणसार । दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक, इच्छा चित्त मझार, सो० ॥६॥ खरतरगच्छ जिन आणा रंगी, राजसागर उवज्झाय । ज्ञान धर्म दीपचन्द सुपाठक, सुगुरु तणे सुपसाय, सो० ॥७॥ देवचन्द जिन भक्ते गायो, जन्म महोच्छव छन्द । बोधबीज अंकूरो उलस्यो, संघ सकल आणंद, सो० ॥८॥

(राग वेलाउल)

इम पूजा भगते करो, आतम हितकाज। तजिय विभाव निज भावमें, रमतां शिवराज, इम० ॥१॥ काल अनन्ते जे हुआ, होस्ये जेह जिणन्द। संपइ सीमंधर प्रभु, केवल नाण दिणन्द, इम० ॥२॥ जन्म महोच्छव इणि परे, श्रावक रुचिवंत। विरचे जिन प्रतिमा तणो, अनुमोदन खंत, इम० ॥३॥ देवचन्द जिन पूजना, करतां भव पार। जिन पड़िमा जिन सारिखो, कही सूत्र मझार, इम० ॥४॥

❀ इति स्नात्रपूजा सम्पूर्णम् ❀

॥ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत ॥

॥ नवपदपूजा प्रारम्भः ॥

अथ प्रथमा अरिहन्त पद पूजा

दोहा—परम मन्त्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यान।
अरिहंत पद पूजा करो, निज २ शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥

॥ काव्य—उपजाति वृत्तम् ॥

उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं, सप्पाडिहेगसण-संठियाणं ॥ सदेसणाणंदियसज्झणाणं; नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥१॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

नमोऽनंतसंत प्रमोद प्रदान, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥२॥
कर्यां कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे, भलां भव्य नवपद-

ध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले सदा वासीयो आतमा तेणेकाले ॥३॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दीये देशना भव्यने हित धरीने सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥४॥ कर्यां घातियां कर्म चारे अलग्गां भवोपग्रही चार जे छे विलग्गां ॥ जगत पंच कल्याणके सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामे ॥५॥

॥ ढाल ॥

तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्म धुरन्धर धीरोजी देशना अमृत वरसता, निज वीरज वडवीरोजी ॥१॥ उलालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन, सर्व भाव प्रकाशता ॥ निज शुद्ध श्रद्धा आतमभावे, चरणथिरता वासता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय, प्रातिहारज शोभता ॥ जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजनने क्षोभता ॥२॥

॥ पूजा ढाल ॥

त्रीजे भव वर स्थानक तप करी, जेणे बांध्युं

जिननाम ॥ चोसठ इन्द्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्रपद वंदो, जिम चिर काले नंदो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आंकणो ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पण अजवालुं ॥ सकल अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमी अघ टालुं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ॥ २ ॥ जे तिहुँ नाण समग्ग उप्पन्ना भोगकरम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा दीए जनने, ते नमीए जिन नाणी रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३ ॥ महागोप महामाहण कहीए, निर्यामिक सत्थवाह। उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमीए उत्साह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जस-छाजे, पांत्रीश गुण युत वाणी। जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमीए प्राणी रे ॥ भ०॥सि०॥५

॥ ढाल ॥

अरिहंत पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे। भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थाय रे ॥ १ ॥ वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभलजो चित्त

लाइ रे । आतमध्याने आतमा, ऋद्धि मले सवि आइ रे ॥ वी० ॥ २ ॥

श्लोक—विमल केवल भासन भस्करं । जगति जन्तु महोदय कारणं । जिनवरं बहुमान जलौघतः । शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत् अर्हत्त पदेभ्यः पंचामृतं, चन्दनं, पुष्पं, धूप, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजमहे स्वाहा ॥

॥ इति अरिहंत पद पूजा ॥१॥

अथ द्वितीय सिद्ध पद पूजा

दोहा—दूजी पूजा सिद्ध की, कीजे दिल खुशियाल।
अशुभ करम दूरे टले, फले मनोरथ माल॥१॥

काव्यं इन्द्रवज्रा वृत्तम् ।

सिद्धाणमाणंदरमालयाणं, नमो नमोऽणंत चउक्कयाणं सम्मग्ग कम्मक्खय कारगाणं, जम्मं जरा दुक्ख निवारगाणं

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ करी आठ कर्म क्षये पार पाम्या जरा जन्म

मरणादि भय जेणे वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पारपामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥१॥ त्रिभागोन देहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जात वर्णादिलेश्या ॥ सदानन्द सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥२॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सकल करममल क्षय करो, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपत्ति भूपो जी ॥ १ ॥ उलाला ॥ जेह भूप आतम सहज संपत्ति, शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे, गुण अनन्ता आदरी ॥ सुखभाव गुण पर्याय परिणति, सिद्धसाधन पर भणी ॥ मुनि राज मानसहंस समवड, नमो सिद्ध महागुणी ॥२॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी

॥ समय पएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विशेष ॥ अवगाहन लहो जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते अशेष रे ॥ भ० ॥सि० ॥६॥ पूर्व प्रयोगने गतिपरिणामे, बंदनछेद असंग ॥ समय एक

ऊर्ध्वगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे भ० ॥ सि० ॥७॥ निर्मल सिद्धशिलानी ऊपरे, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ भ० ॥ सि० ॥८॥ जाणे पण न शके कही पुरगुण, प्राकृत तेम गुण जास ॥ उपमा विण नाणो भव मांहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥ भ० ॥ सि० ॥९॥ ज्योतिशुँ ज्योति मली जस अनुपम विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० ॥ सि० ॥१०॥

॥ ढाल ॥

॥ रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसण नाणी रे ॥ ते ध्यातां निज आतमा, होये सिद्ध गुणखाणी रे ॥ वी० ॥ २ ॥

श्लोक—विमल केवल०

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्माने, अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत् सिद्ध पदेभ्यो अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा।

॥ इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

अथ तृतीय आचार्यपद पूजा

दोहा—हिव आचारज पद तणी, पूजा करो विशेष।
मोह तिमिर दूरे हरे, सूझे भाव अशेष ॥१॥

इन्द्रवज्रा वृत्तम्

सूरीण दूरीकयकुग्गहाणं, नमो नमो सूरसमप्पहाणं।
सद्देसणा दाणसमायराणं, अखंड छत्तीस गुणायराणं ॥१

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमुं सूरिराजा, सदा तत्त्वताजा, जिनेन्द्रागमे प्रौढ साम्राज्यभाजा॥ षट्वर्गवर्गित गुणे शोभमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥ १ ॥ भविप्राणीने देशना देश काले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले॥ जिके शासनाधार दिग्दंति कल्पा, जगे ते चिर जीवजो शुद्धजल्पा ॥२॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ आचारज मुनिपति गणि, गुणछत्रीशी धामो जो ॥ चिदानन्द रस स्वादता, परभावे निःकामो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी ॥ निज ज्ञान

दर्शन चरण वीरज, साधना व्यापारथी ॥ भविजीव बोधक तत्त्वशोधक, सयल गुण संपतिधरा । संवर समाधि गतउपाधि दुविध तपगुण आगरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ पंच आचार जे सूधा पाले, मारग भाखे साचो ॥ ते आचारज नमीए तेहशुं, प्रेम करीने जाचो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ११ ॥ वर छत्रीश गुणे करी सोहे, युगप्रधान जन मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित्य अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहीं विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमीए, अकलुष अमल अमाय रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दीए सारण वारण चोयण, पडिचोयण वली जनने ॥ पटधारी गच्छथंभ आचारज, ते मान्या मुनिमनने रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १४ ॥ अत्थमीए जिनसूरज केवल, चंदे जे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रकटन पटु ते, आचारज चिरंजीवो रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥ वी० ॥

श्लोक—विमल केवल० ।ॐ ह्रीं श्रीं परमा० श्रीमदाचार्यं० ॥

॥ इति श्रीआचार्य पद पूजा ॥

अथ चतुर्थी उपाध्याय पद पूजा

दोहा—गुण अनेक जग जेहना, सुन्दर शोभित गात्र।
उवझाया पद अरचिये, अनुभव रसनो पात्र ।१।

काव्यं—इन्द्रवज्रा वृत्तम् !

सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं । णमो णमो वाय कुंजराणं ।
गणस्स संधारण सायराणं। सव्वप्पणा वज्जिय मच्छराणं १

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नहीं सूरि पण सूरिगणने सहाया, नमुं वाचका त्यक्त मद मोह माया ॥ वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ-दाने, जिके सावधाना निरुद्धाभिमाने ॥१॥ धरे पंचने वर्ग वर्गित गुणौघा, प्रवादि द्विपोच्छेदने

तुल्य सिंघा ॥ गुणी गच्छसंधारणे स्थंभभूता, उपाध्याय ते वंदीए चित् प्रभूता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ खंतिजुआ मुत्तिजुआ, अज्जव मद्दव जुत्ताजी ॥ सच्चं सोयं अकिंचणा, तव संयम गुणरत्ताजी ॥१॥ उलालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुत्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा ॥ स्याद्वादवादे तत्त्ववादक, आत्म पर विभजन करा ॥ भवभीरु साधन धीरशासन, वहन धोरी मुनिवरा ॥ सिद्धांत वायण दान समरथ, नमो पाठक पदधरा ॥२॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ द्वादश अंग सज्झाय करे जे, पारग धारक ताम ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥ भ० ॥ सि० ॥१६॥ अर्थ सूत्रने दानविभगे, आचारज उवज्झाय ॥ भव त्रीजे जे लहे शिवसंपद्, नमीए ते सुपसाय रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १७॥ मूरख शिष्य निपाइ जे प्रभु, पाहाणने पल्लव आण । ते उवज्झाय सकल जन पूजित, सूत्र अर्थ

सवि जाणे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १८ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग । जे उवज्झाय सदा ते नमतां, नावे भवभय शोग रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १९ ॥ बावना चंदन रस सम वयणे, अहित ताप सवि टाले । ते उवज्झाय नमीजे जे वली, जिनशासन अजुवाले रे ॥भ०॥ सि० ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥

॥ तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ।
उपाज्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ।
वी० ॥ ५ ॥

श्लोक—विमल केवल० । ॐ ह्रीं श्रीं परमा० श्रीमदुपा० ॥

॥ इति श्री उपाध्याय पद पूजा ॥

अथ पंचमी साधु पद पूजा ।

दोहा—मोक्ष मारग साधन भणी, सावधान यथा जेह ।
ते मुनिवर पद वंदतां, निर्मल थाये देह ॥१

काव्यं—इन्द्रवज्रा वृत्तम् ।

साहूण संसाहिय संजमाणं, नमो नमो सुद्ध

दयादमाणं । तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं, मुणीण माणंद पयट्ठियाणं ॥ १ ॥

॥ भुजगप्रयातवृत्तम् ॥

करे सेवना सूरि वायग गणिनी, करु' वर्णना तेहनी शो मुणिनी । समेता सदा पंच समिति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्त नहीं कामभोगेषु लिप्ता ॥ १ ॥ वली बाह्य अभ्यंतर ग्र'थि टाली, होये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली । शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

सकल विषय विष वारीने, निःकामी निःसंगी जी । भव दव ताप शमावता, आतम साधन रंगी जो ॥१॥ उलालो ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा । काउस्सग्ग मुद्रा धीर आसन ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपे कर्म झीपे, नैव छीपे पर भणी । मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन. बंधु प्रणमुं हित भणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्री पालना रासनी ॥

जिम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तस न उपावे। लेइ रसने आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जावे रे ॥ भ० । सि० ।२१॥ पञ्च इंद्रियने जे नित्य झीपे, षट्कायक प्रतिपाल। संयम सत्तर प्रकारे आराधे, वंदु तेह दयाल रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र। मुनि महंत जयणा युत वन्दी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ भ० । सि० । २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, बारस विह तप शूरा। एहवा मुनि नमीए जो प्रगटे, पूरव पुण्य अंकुरा रे ॥ भ० । सि० । २४ ॥ सोना तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने। संजम खप करता मुनि नमीए, देश काल अनुमाने रे ॥ भ० । सि० । २५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचे रे। साधु सुधा ते आतमा, शुं मूंड्ये शुं लोचे रे। वी०॥१॥

श्लोक—विमल केवल० । ॐ ह्रीं श्रीं परम० श्रीमत्साधु०

॥ इति श्री साधु पद पूजा ॥

अथ षष्ठी दर्शनपद पूजा

दोहा

जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्त्व तणी परतीत ।
ते सम्यग् दर्शन सदा, आदरिये शुभ रीत ॥१॥

काव्यं इन्द्रवज्रा वृत्तम्

जिणुत्त तत्ते रुइलक्खणस्स, नमो नमो निम्मल दंसणस्स । मिच्छत्त नासाइ समुग्गमस्स, मूलस्स सद्धम्म महादुमस्स ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम ॥

विपर्यास हठ वासना रूप मिथ्या, टले ज अनादि अच्छे जेम पथ्या । जिनोक्ते होये सहजथी श्रद्धानं, कहीए दर्शनं तेह परमं निधानं ॥१॥
विना जेहथी ज्ञान अज्ञानरूपं, चरित्रं विचित्रं भवारण्यकूपं । प्रकृति सातने उपशमे क्षय ते होवे, तिहां आपरूपे सदा आप जोवे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

सम्यग्दर्शन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत स्वरूपो जी। जसु निरधार स्वभाव छे, चेतनगुण जे अरूपो जी ॥१॥ उलालो ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल पर ईहा टले ॥ निज शुद्ध सत्ता प्रगट अनुभव, करणरुचिता उच्छले। बहुमान परिणति वस्तुतत्त्वे, अहव तसु कारण पणे ॥ निज साध्यदृष्टे सर्व करणी, तत्त्वता संपत्ति गणे ॥२॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्री पालना रासनी ॥

॥ शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम। जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ भ०। सि०। २६ ॥ मल उपशम क्षयउपशम क्षयथी, जे होय त्रिविध अभंग। सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, जिनधर्मे दृढ रंग रे ॥ भ०। सि० ।२७॥ पंच वार उपशमीय लहीजे, क्षय उपशमीय असंख। एक वार क्षायिक ते समकित, दर्शन नमीए असंख रे ॥ भ०। सि०। २८ ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्रतरु नवि फलीयो। सुख निर्वाण न

जे विण लहीए, समकित दर्शन बलीयो रे ॥ भ०
। सि० ।२९॥ सडसठ बोले जे अलंकरीयुं, ज्ञान
चारित्रनुं मूल। समकितदर्शन ते नित्य प्रणमुं,
शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० । सि० । ३० ॥

॥ ढाल ॥

शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशम जे आवे
रे । दर्शन तेहीज आतमा, शुं होय नाम धरावे रे॥
वी० ॥ ७ ॥

श्लोक—विमल केवल० ।ॐ ह्रीं श्री परम० दर्शनपदेभ्य०॥६

॥ इति श्री दर्शन पद पूजा ॥

अथ सप्तमी ज्ञान पद पूजा

दोहा

सप्तम पद श्री ज्ञाननुं, सिद्ध चक्र तप मांहि ।
आराधीजे शुभ मने, दिन दिन अधिक उछांहि ॥१॥

काव्यम् इन्द्रवज्रा वृत्तम्

अन्नाण संमोह तमोहरस्स, नमो नमो नाण
दिवायरस्स । पंचप्पयारस्सुवगारगस्स, सत्ताण
सव्वत्थ पयासगस्स ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावरण नासे विचित्रावबोधे। तेणे जाणीए वस्तु षड्द्रव्य भावा, न हुये वित्तत्था (वाद) निजेच्छा स्वभावा ॥१॥ होय पंच मत्यादि सुज्ञानभेदे, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे। वली ज्ञेय हेय उपादेयरूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

भव्य नमो गुणज्ञानने, स्व पर प्रकाशक भावे जी। परजाय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावे जी ॥१। उलालो ॥ जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोध भाव विलच्छना। मति आदि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लच्छना। स्याद्वादसंगी तत्त्व-रंगी, प्रथम भेदाभेदता। सविकल्प ने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

भक्षाभक्ष न जे विण लहीए, पेय अपेय विचार। कृत्य अकृत्य न जे विण लहीए, ज्ञान

ते सकल आधार रे ॥ भ० । सि० । ३१ ॥ प्रथम ज्ञान ने पश्ठी अहिंसा, श्री सिद्धांते भाख्युं । ज्ञान ने वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीए शिवसुख चाख्युं रे ॥ भ० । सि० । ३२ ॥ सकल कियानुं मूल जे श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहीए । तेह ज्ञान नित नित वंदीजे ते विण कहो किम रहीए रे ॥ भ० । सि० ॥ । ३३ । पंच ज्ञान मांहि जेह सदागम स्व पर प्रकाशक जेह ॥ दीपक परे त्रिभुवन उपकारी, वलीजिम रवि शशी मेह रे । भ० ॥ सि । ३४ । लोक ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध । लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, तेह ज्ञाने मुज सुद्ध रे ॥ भ० । सि० । ३५ ॥

॥ ढाल ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थाय रे । तो हुए एहीज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे ॥ वी० ॥ ८ ॥

श्लोक—विमल केवल० ।

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमात्मने० ज्ञानपदेभ्यः० ॥

॥ इति श्री ज्ञान पद पूजा ॥

अथ अष्टमी चारित्र पद पूजा ।

दोहा

अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी उमेद ।
पूजत अनुभव रस मिले, पातिक होय उछेद ॥१॥

काव्यं इन्द्रवज्रा वृत्तम्

आराहिय खंडिअ सक्किअस्स, नमो नमो संजम वीरिअस्स । सब्भावणा संग विवड्ढयस्स, निव्वाण दाणाइ समुज्जयस्स ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

वली ज्ञानफल चरण धरीए सुरंगे, निराशंसता द्वार रोध प्रसंगे । भवांभोधि संतारणे यान तुल्यं, धरुं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ १ ॥ होये जास महिमा थकी रंक राजा, वली द्वादशांगी भणी होय ताजा । वली पापरूपोपि निःपाप थाय, थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

चारित्र गुण वली वली नमो, तत्त्वरमण जसु मूलो जी । पर रमणीयपणुं टले, सकल सिद्ध

अनुकूलो जी ॥ १ । उलालो॥ प्रतिकूल आश्रव-त्याग संयम, तत्त्वथिरता दममयी । शुचि परम खंति मुत्ति दश पद, पंच संवर उपचई । सामा-यिकादिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता । अकषाय अकलुष अमल उज्ज्वल, काम कश्मल चूर्णता ॥२॥

॥ पूजा । ढाल । श्रीपालना रासनी ॥

देशविरति ने सर्वविरति जे, गृही यतिने अभिराम । ते चारित्र जगत् जयवंतु, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भ० । सि० । ३६ ॥ तृण परे जे षट् खंड सुख ठंडी, चक्रवर्ती पण वरीयो । ते चारित्र अक्षय सुखकारण, ते में मन मांहे धरीयो रे ॥ भ० । सि० । ३७ ॥ हुआ रांकपणे जे आदरी, पूजित इंद नरिंदे । अशरण शरण चरण ते वंदुं पूरयुं ज्ञान आनन्दे रे ॥ भ० । सि० । ३८ । बार मास पर्याये जेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमिए । शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते ऊपरे, ते चारित्रने नमीए रे ॥ भ० । सि० ।३९॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह । चारित्र नाम निरुत्ते भाख्युं, ते वंदु

गुणगेह रे ॥ भ० । सि० । ४० ॥

॥ ढाल ॥

जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे । लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० । ९ ॥

श्लोक—विमल केवल० । ॐ ह्रीं श्रीं परम० चारित्रपदेभ्यः० ।

॥ इति श्रीचारित्रपद पूजा ॥

अथ नवमी तप पद पूजा

दोहा

कर्म काष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समान ।
तप पद पूजो भवि सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥१॥

काव्य इन्द्रवज्रा वृत्तम्

कम्मद्दुमोम्मूलण कुंजरस्स, नमो नमो तिव्व तवो भरस्स । अणेग लद्धीण निबंधणस्स, दुस्सज्झ अत्थाण य साहणस्स ॥ १ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

इय नवपयसिद्धं, लद्धि विज्झा समिद्धं । पयडियसुरवग्गं, ह्रीं तिरेहा समग्गं । दिसवइ सुर-

सारं, खोणिपीढावयारं। तिजय विजयचक्कं, सिद्ध-
चक्कं नमामि ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाले, निकाचित-
पणे बांधीयां तेह बाले। कह्युं तेह तप बाह्य अंतर
दुभेदे, क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ २ ॥ होये
जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि, अवांच्छकपणे
कर्म आवरणशुद्धि। तपो तेह तप जे महानंद हेते,
होय सिद्धि सीमांतनी जिम संकेते ॥ ३ ॥ इस्या
नव पद ध्यानने जेह ध्यावे, सदानंद चिद्रूपता तेह
पावे। वली ज्ञानविमलादि गुणरत्नधामा, नमुं ते
सदा सिद्धचक्रप्रधाना ॥ ४ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

इम नव पद ध्यावे, परम आनंद पावे। नवमे
भव शिव जावे, देव नरभव पावे। ज्ञान विमल गुण
गावे, सिद्धचक्रप्रभावे। सवि दुरित समावे, विश्व
जयकार पावे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदे जी । आतमसत्ता एकता, परपरिणति उच्छेदे जी ॥१ उलालो ॥ उच्छेदे कर्म अनादि संतति, जेह सिद्ध-पणुं वरे । योगसंगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे । अंतरमुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी । निज आत्मसत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥२

॥ ढाल ॥

एम नव पद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणे जी । सात नये जे आदरे, सम्यग्ज्ञानने जाणे जी ॥ ३ । उलालो ॥ निर्द्धारसेती गुणी गुणनो, करे जे बहुमान ए । तसु करण ईहा तत्त्वरमणे थाय निर्मल ध्यान ए । एम शुद्धसत्ता भल्यो चेतन, सकल सिद्धि अनुसरे । अक्षय अनंत महंत चिद्घन परम आनंदता वरे ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्धचक्र पदा-वली । सवि लद्धि विद्या सिद्धिमंदर, भविक पूजो

ान रुली । उवज्झायवर श्रीराजसागर, ज्ञानधर्म
ुराजता । गुरु दीपचन्द सुचरण सेवक, देवचन्द
ुशोभता ॥ १ ॥

॥ पूजा । ढाल । श्रीपालना रासनी ॥

जाणंता त्रिहुँ ज्ञाने संयुत, ते भव मुक्ति जिणंद
जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरुकंद रे ॥
भ० । सि० । ४१ ॥ कर्म निकाचित पण क्षय
जाये, क्षमा सहित जे करतां । ते तप नमीए जेह
दीपावे, जिनशासन उजमंता रे ॥ भ० ।सि०।४२॥
आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवे जास प्रभावे ।
अट्ठ महा सिद्धि नव निधि प्रगटे, नमीए ते तप
भावे रे ॥ भ० । सि० । ४३ ॥ फल शिवसुख
महोटुं सुर नरवर, संपत्ति जेहनुं फूल। ते तप सुर-
तरु सरिखुं वंदु, शम मकरंद अमूल रे ॥ भ० ।
सि० । ४४ ॥ सर्व मंगल मांहि पहेलुं मंगल, वर-
णवीए जे ग्रन्थे ॥ ते तपपद त्रिहुं काल नमीजे,
वर सहाय शिवपंथे रे ॥ भ० । सि० । ४५ ॥ एम
नव पद थुणतो तिहां लीनो, हुओ तन्मय श्रीपाल।

सुजश विलास छे चोथे खंडे, एह अग्यारमी ढाल रे ॥ भ० । सि० । ४६ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधे संवरी, परिणति समतायोगे रे। तप ते एहीज आतमा, वर्ते निज गुण भोगे रे ॥ वी० । १० ॥ आगम नोआगम तणो, भाव ते जाणो साचो रे । आतमभावे थिर होजो, परभावे मत राचो रे ॥ वी० । ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घट मांहे ऋद्धि दाखी रे । तेम नव पद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखो रे ॥वी०।१२॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नव पद मुख्य ते जाणो रे । एह तणे अवलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० । १३ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे । वाणी वाचक जश तणी, कोइ नये न अधूरी रे ॥ वी० । १४ ॥

॥ अथ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणं । जिनवरं बहुमानजलौघनं, शुचिमनाः

स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० तपपदेभ्यः० ॥

॥ इति श्री तपपद पूजा ॥

स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकल देव विमल कलश नीरे। आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्धा ॥ २ ॥ हर्ष धरी अप्सरावृन्द आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे। जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीबृहन्नवपद पूजा सम्पूर्ण ॥

अथ अष्ट प्रकारी पूजा

१ जल पूजा।

विमल केवल भासन भास्करं, जगति जन्तु महोदयकारणं। जिनवरं बहु मान जलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

२ चन्दन पूजा ।

सकल मोह तिमिश्र विनाशनं, परम शीतल भाव युतं जिनं। विनय कुंकुम दर्शन चन्दनैः, सहजतत्त्वविकाशकृतेऽर्चये ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं परम-पुरुषाय परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेद्राय चन्दनं यजा-महे स्वाहा ॥ २ ॥

३ पुष्प पूजा ।

विकच-निर्मल-शुद्ध-मनोरमै—विशद—चेतन भाव समुद्भवैः । सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैः, परम-तत्त्वमयं हि यजाम्यहं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा॥३॥

४ धूप पूजा ।

सकल कर्ममहेन्धन दाहनं, विमल-संवर-भाव सुधूपनं । अशुभ पुद्गल संग विवर्ज्जनं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु

निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥४

५ दीप पूजा

भविक निर्मल बोध विकाशकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं। सुगुण-राग-विशुद्धि समन्वितं, दधतु भाव-विकाशकृते जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥५

६ अक्षत पूजा

सकल मंगल केलि निकेतनं, परम मंगल भाव मयं जिनं। श्रयत भव्यजना ! इति दर्शयन्, दधतु नाथपुरोऽक्षत स्वस्तिकं ॥६॥ ॐ ह्रीं परम-पुरुषाय परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्दाय अक्षतं यजा-महे स्वाहा ॥ ६ ॥

७ नैवेद्य पूजा

सकल पुद्गलसङ्ग विवर्ज्जनं, सहजचेतन भाव-विलासकं। सरस भोजननव्यनिवेदनात्, परमनि-वृत्तिभागमहं स्पृहे ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय

परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेद्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥७

८ फल पूजा

कटुककर्म विपाकविनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकन। वहति मोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परमपुरुषाय परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥८॥

जय जय आरती शान्ति तुमारी, तोरां चरण-कमलकीमैं जाऊ बलिहारी॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नन्दा, शान्तिनाथ सुख पूनमचन्दा ॥ जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष सोवनमय काया, मृग लंछन प्रभु चरण सुहाया जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती प्रभु पांचमा सोहे, सोलमा जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥ ४ ॥ मंगल आरती मोर ही कीजे, जन्म जन्मको लाहो लीजे ॥ जय० ॥ ५ ॥ जोड़ी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमरपद पावे ॥जय० ॥६॥

नवपदोंके नव चैत्यवन्दन नव स्तवन

नव थुइ

श्री अरिहन्त पद चैत्यवन्दन ।

जय जय श्री अरिहन्त भानु भवि कमल विकाशी । लोकालोक अरूपी रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥ १ ॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशि । शुक्ल चमर शुचि पाद से, भयोवर अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणिये हूए अप्पा अरिहन्त । तासु पद पंकजमें रही, हरि धर्म नित संत ॥ ३ ॥

॥ श्री अरिहन्त पद स्तवन ॥

॥ पूजो मनरली, हां हो दादा कुशल सूरींद ॥ ॥ पू० ॥ ए देशी ॥ श्री तेरम गुण वसि, कंत, कर्मकुंभंजे श्री अरिहन्त ॥ मन मान ले ॥ अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥म० ॥ १ ॥ बादर काये मन बच भोग, तनु तनुसे फुन दृढ तनु जोग ॥ मन० ॥ सुखम कायते मन बच्च

रोक, निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ मन० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, बेइन्द्रिने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय रह्यो पणक सुजीव, सुखम लह्यो तिण जोग अतीव ॥मन०॥ ३ ॥ एषा योगथी समये एक, हीना संखगुणो कर छेक ॥ म० ॥ समया संखे जोग निरोध. कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ मन० ॥ ४ ॥ वेद समे ना हारता पाय, कुशल कहे ते श्री जिनराय ॥ म० ॥ तेरमे गुणमें गुण समे देव आपो सा जगकुं नितमेव ॥ मन० ॥ ५ ॥

श्री अरिहन्त पद स्तुति ।

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपो जी;
केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनन्त गुणे करी पूरोजी
तीजे भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरो जी;
बारे गुणा कर एहवा अरिहन्त, आराधो गुण भूरोजी ॥१

—:०:—

श्रीसिद्ध पद चैत्यवन्दन

श्री शैलेशी पूर्व प्रान्त, तनु हीन त्रिभागी । पुव्व

पओग असंग ते, ऊरध गति जागी ॥१॥ समय एकमें लोक प्रान्त, गये निगण निरागी। चेतन भूपे आतम रूप, सुदिशा लही सागी ॥२॥ केवल दंसण नाणथी ए, रूपातीत स्वभाव, सिद्ध भये तसु 'हीरधर्म', वंदे धरी शुभ भाव ॥ ३ ॥

श्रीसिद्ध पद स्तवन

'थारे माहेला ऊपर मेह भवूके बीजली म्हारा लाल;।भवूके०" ए देशी

अष्ट वरस नग मास, हीना कोड़ी पूर्वमें; म्हारा लाल हीना० । उत्कृष्टो करे वास, सयोगी धाममें म्हा० सयो० । अजोगीके अन्त, तजे भव भव्यता; म्हा० तजे०। शैलेशी लहे कर्म दले गुणश्रेणिंता।१ ह्स्वाक्षर पंच काल, रहे ते योगमें, म्हा० रहे० । तेरस प्रकृतिनो अन्त, करीने अन्तमें म्हा० करी० । गमन करे नग रज्जुसे, अक्रिय होयने म्हा० अक्रि० । पुव्व पयोग असंग, स्वभाव अवन्धने, म्हा० स्वभा० ॥२॥ इषु गुण नव (४५) परिमाण, जोजण लक्षे कही; म्हा० जोजन० । वर्तुल विशदा भास, निरालम्बन सही; म्हा० निरा० । मध्ये जोजन अष्ट, घनाकृति अंतमें;

म्हा० घना० । मक्षी पक्षथी हीन, भणी सिद्धान्तमें म्हा० भणी० ॥३॥ तनुपब्भारा नाम शिलासे जोयने म्हा० शिला० । जुग लोचनमें भाग, अलोककुं स्पर्शने; म्हा० अलो० । लघु अंगुल बत्तीस, प्रमाण अवगाहना; म्हा० प्रमाण० वृद्धि धनु शत पंच, गुणांसे हीनता; म्हा० गुणां० ॥४॥ मिलिया एकमेंऽनन्त आबाधा ना लही; म्हा० आबा० अष्ट प्राण धरी रम्य, निरीही जो सही; म्हा० निरी० । बीजो पद श्रीसिद्ध, धरो मनगेहमें; म्हा० धरो० । 'कुशल' भये जगजीव, मिलोगा तेहमें, म्हा० मिलो० ॥५॥

श्रीसिद्ध पद स्तुति ।

अष्ट करमकुं धमन करीने, गमन कियो शिववासीजी;
अव्याबाध सादि अनादि, चिदानन्द चिद्राशिजी।
परमातम पद पूरण विलासी, अघ घन दाघ विनासीजा;
अनन्त चतुष्कमय शिवपद ध्यावो, केवल ज्ञानी भासी
जी ॥१॥

आचार्य पद चैत्यवन्दन ।

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुणधारी।

प्रबल सबल घन मोहकी, जिण ते चमुहारी ॥१॥
ऋज्वादिक जिनराज गीत, नय सन विस्तारी ।
भव कूपे पापे पड़त, जगजन निस्तारी ॥२॥
पंचाचारी जीवके, आचारज पद सार ।
तिनकूँ वन्दे 'हीर धर्म', अट्ठोत्तर सौ बार ॥ ३ ॥

श्रीआचार्य पद स्तवन

"नणदल । बीन्दलीले" ए चाल

खंती खड़गथी जेणे, हएयों क्रोध सुभट समदेणे,
हो गणपति ! गुणपेखी ॥ टेर ॥
मान महागिरि वयरे, अतिशोभन मद्दव वयरे; हो
ग० १ ॥
दम्भ रूप विषवेली, वर अज्जव कीले ठेली; हो
ग० २ ॥
मूर्छा वेलथी भरियो, लोहे सागर मुत्तो तरियो; हो
ग० ३ ॥
मदन नाग मद होनो, जिन दम शम जंत्रे कीनो; हो
ग० ४ ॥

मोह महामल्ल ताड्यो, पुण बैराग मुग्गरे पाड्यो; हो
ग० ५ ॥

दोष गयंद वस कीनो, धरि उपशम अंकुश लीनो; हो
ग० ६ ॥

अंतरंग रिपु भेद्या, सुरवर पिण जेणे निखेद्या; हो
ग० ७ ॥

रस-कृति-गुणथी लीनो, सूत्र अर्थे आगम पीनो; हो
ग० ८ ॥

आचारज पद एह्वो, धरी जीव कुशल सेवो; हो
ग० ९ ॥

श्रीआचार्य पद स्तुति

पंचाचार पाले उजवाले, दोष रहित गुणधारी जी,
गुण छीत्तीसे आगमधारी, द्वादश अङ्ग विचारी जी
प्रबल सबल घनमोह हरणको, अनिलसमो गुण वाणीजी
क्षमा सहित जे संयम पाले आचरज गुण ध्यानीजी।१।

श्रीउपाध्याय पद चैत्यवन्दन।

धन धन श्रीउवज्झाय राय, शठता घन भंजन।

जिनवर देसित दुवालसंग, कर कृत जनरंजन ॥१॥
गुणवण भंजन मण गयन्द, सुयशणि किय गंजण ।
'कुणलंध' लोय लोयणे, जत्थ य सुय मंजन ॥२॥
महा प्राणमें जिन लह्यो ए, आगमसे पद तूर्य ।
तिनपे अहनिश 'हीरधर्म', वन्दे पाठक वर्य ॥३॥

श्री उपाध्याय पद स्तवन ।

[तज—सावलिया । अलगा रहो ने]

हुयने हुयने हुयने दूरी हुयने, चेतन भाखे शठने तें दूरी हुयने । तूं मुझ पास क्यूं आवे ? दू० । तो भूंडीने कुण बतलावे ? दू० ॥ टेर ॥ तो संगे निज पंचेन्द्रियनो, रचना चरम भूलाणो । नाणा-वरणी खय उपशमसे, भावेंद्री मंडाणो, दू० ॥१॥ द्रव्ये ते परजाप्ते कीना, जाति नाम व्यपदेश । एवं तो गो तुरग गजादिक, किण कर्मे उपदेश, दू० ॥२॥ इत्यादिक बहु मुझको शंका, तेरे संगे लागी । नील वर्ण की समता सेती, मैं भयो तोसूं रागी, दू० ॥३॥ उप कहिये हणियो भवियानो,

अधियां लाभत आय, आधीना मन पीड़ा नामे, मायो येन विलाय, दू० ॥४॥ आधिक्ये स्मरिए वर आगम, सूत्रसे ते उवज्झाय। ता सेवाते हणी शठताकुं, चेतन कुशलता पाय, दू० ॥५॥

श्री उपाध्याय पद स्तुति।

अंग इग्यारे चउदे पूरव, गुण पचवीसना धारी जी; सूत्र अरथ घर पाठक कहिए, जोग समाधि विचारी जी तप गुण शूरा आगम पूरा, नय निक्षेपे तारी जी; मुनि गुण धारी बुध विस्तारी, पाठक पूजो अविकारी जी ॥१॥

श्रीसाधु पद चैत्यवन्दन।

दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी। धर्म शुक्ल शुचि चक्रसे, आदिम खय कामी ॥१॥ गुण पमत्त अपमत्त ते, भये अन्तरजामी। मानस इन्द्रिय दमनभृत, शम दम अभिरामी ॥२॥ चारु ति घन गुण गण भर्यो ए, पञ्चम पद मुनिराज। तत्पद पंकज नमत है, 'हीरधर्म' के काज ॥३॥

श्रीसाधु पद स्तवन ।

[तर्ज—मालन मालन मति कहो]

निकषाया जगजन कहे, धारे चउगति वसनसे रोष हो; मुणिंदजी ! राग हीन भय तूं करे, साहिबा ! शिव रमणीसे हेत हो; मुणिंदजी ! ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजि रहे, सा० छट्ठे पूरव कोड़ हो; मु० ! शतसोगम आगम करे, सा० लघु काले गुण आदि हो; मु० ! ॥ २ ॥ थिनद्धी निद्रा उदे, सा० पामे कर्म निकन्द हो; मु० । प्रचला निद्रामें रही, सा० बारम गुणनो वास हो; मु० ॥३॥ स्थिति रस घात प्रमुख कर, सा० जो गुण संख्याती हो; मु० । तो पिण त्रण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो; मु० ॥ ४ ॥ रयण त्रयसे शिवपथे, सा० साधन पर वर जीव हो; मु० । साधु हुवे तसु धर्म में, सा० 'कुशल' भवतु जगतीव हो; मु० ॥ ५ ॥

श्रीसाधु पद स्तुति ।

सुमति गुपति कर संयम पाले, दोष बयालिश टाले जी;

षट्काया गोकुल रखवाले, नवविध ब्रह्मव्रत पाले जी। पञ्च महाव्रत सूधा पाले, धर्म शुकल उजवाले जी; क्षपकश्रेणी करी कर्म खपावे, दम पद गुण उपजावे जी ॥ १ ॥

—:o:o:—

श्रीदर्शन पद चैत्यवन्दन।

हुय पुग्गल परियट्ट अड्ढ, परिमित संसार। गंठिभेद तब करी लहे, सब गुण नो आधार ॥१॥ क्षायक वेदक शशि असंख, उपशम पण वार। विना जेण चारित्त नाण, नहीं हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्रीसुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लच्छन अभिराम। दर्शनको गणि 'हीरधर्म', अहनिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥

श्रीदर्शन पद स्तवन।

तर्ज—रामचन्द्र के बाग आंबो मोहि रह्यो री।

देव श्री जिनराज, गुरु ते साधु भण्यो री। धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लंछण बोध तणो री ॥ १ ॥

बोधिलाभ के काज, सतम नरक भलो री। तेण बिना सुरलोक, ताते अधिक बुरो री ॥२॥ मिथ्या तापे तप्त, बोध ही छांह लहे री। उपशम क्षायक वेद, ईश्वर तीन कहे री ॥३॥ भवसागर है अपार, पुणि अस्ताघ कह्यो री। जसु लाभे ते होय, गोरपद मात्र खरो री ॥४॥ यदभावे अप्रमाण, नाण चरित्त भलो री। बोध धर्म में जीव, लाभे 'कुशल' कला री ॥५॥

श्रीदर्शन पद स्तुति।

जिनपन्नत्त तत्त सूधा सरधे, समकित गुण उजवाले जी
भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुर पावे जी।
प्रत्याख्याने सम तुल्य भांख्यो, गणधर अरिहन्त शूरा जी;
ए दरिसण पद नित नित वंदो, भवसागरको तीरा जी ॥१

—:०:—

श्रीज्ञान पद चैत्यवन्दन।

क्षिप्रादिक रस राम वन्हि, मित आदिम नाण।

भाव मिलापसे जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥१॥
भवगुण पच्चइ ओहि दोय, मन लोचन माण।
लोकालोक सरूप जाण, इक केवल भाण ॥ ५ ॥
नाणावरणी नाशथी ए, चेतन नाण प्रकाश । सप्तम
पदमें 'हीरधर्म', नित चाहत अवकाश ॥ ५ ॥

ज्ञान पद स्तवन ।

[तर्ज—म्हारे अति उछरगे]

जिनवर भाषित आगम भणिया, तत्त्व यथा-
स्थित गमिया जी; म्हारे जगजन तारु । ते उत्तम
वर नाण कहाए, भविजन अहनिशि चाहे जी;
म्हा० ॥ १ ॥ भक्ष्याभक्ष्य कुपंथ सुपंथा, पेयापेय
अग्रन्था जी; म्हा० । देव कुदेव अहित हित धारी,
जाणे जेण विचारी जी; म्हा० ॥२॥ श्रुत मति दोय
छे इन्द्री सारू, तेण परोक्ष विचारू जी; म्हा० ।
ओही मण केवल है वारू, जीव प्रत्यक्ष सुधारू
जी; म्हा० ॥३॥ अज्ञवि जस्स बले जग जाणे,
लोकादिक अनुमाने जी; म्हा० । त्रिभुवन पूजे

जास पसाये, धारी शुभ अध्यवसाये जी; म्हा० ॥४॥
नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकुं विलसे
जी, म्हा० । सप्तम पदमें भविजन हरखे, निशदिन
'कुशल'ता निरखे जी, म्हा० ॥ ५ ॥

ज्ञान पद स्तुति ।

मति श्रुत इन्द्रि जनित कहिए, लहिये गुण गंभीरो जी,
आगमधारी गणधर विचारी, द्वादश अंग विस्तारो जी
अवधि मनपर्यव केवल वली, प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी
ए पंच ज्ञानकुं वंदो पूजो, भविजनने सुखकारो जी ॥७॥

चारित्र पद चैत्यवन्दन ।

जस्स पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेन्द ।
नमन करे शुभ भाव लाय, फुण नरपति वृन्द ॥१॥
जंपे धुरि अरिहंत राय, करी कर्म निकन्द । समिति
पंच तीन गुप्ति युत, दे(वे) सुक्ख अमन्द ॥२॥ इषु
कृति मान कषायथी ए, रहित लेश शुचिवन्त ।
जीव चरित्तकुं 'हीरधर्म', नमन करत नित संत ॥३॥

चारित्र पद स्तवन ।

निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाभास निरसंग, सुज्ञानी ! सांभलो मूर्तिहीन चेतन करे, रूपी पुद्‌गल रंग, सु० ॥१॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण भाव, सु० । कृत्वा जोग सुधामता, लब्धासंख स्वभाव, सु० ॥२॥ पर्याप्ता लघु जोग में, वृद्धि लहे जुगमान, सु० । मध्ये वसु समये लहे, अन्ते द्वौ ते जाण, सु० ॥३॥ सहकारी मानस मुखा, कारण रस्य बलेण, सु० । प्राप्ताघस्र प्रकारता, सप्त प्राभृतका तेन, सु० ॥४॥ तद्बोधन रूपी भलो, चेतन संयम धाम, सु० । कर घन मिल पद धर्म में, 'कुशल' भवतु अभिराम, सु० ॥५॥

चारित्र पद स्तुति ।

कर्म अपचय दूर खपावे, आतम ध्यान लगावे जी
बारे भावना सूधी भावे, सागर पार उतारे जी
षट् खंड राजकुं दूर तजी ने, चक्री संजम धारे

एहवो चारित्र पद नित नित वंदो, आतमगुण
हितकारे जी ॥ १ ॥

॥ श्रीतप पद चैत्यवन्दन ॥

श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण।
विहि अन्तैरपि बाह्य मध्य, द्वादश परिमाणं ॥१॥
वसु कर मित आमोसही, आदिक लब्धि निदान।
भेद समता युत खिणे, दृग्घन कर्म विमान ॥२॥
नवमो श्री तपपद भलो ए, इच्छारोध सरूप।
वंदन से नित 'हीरधर्म', दूर भवतु भवकूप ॥३॥

॥ श्रीतप पद स्तवन ॥

("आसणरा रे योगी" ए देशी)

बारस भेद भण्या जिनराजे, बाह्य मध्य तणा जगकाजे रे; शिवपदनी श्रेणि। तिण भव सिद्धि तणा वर ज्ञाता, जिनवर पिण तपना कर्ता रे, शि० ॥१॥ समता सहिते जिनते भारी, भली कर्म चमू पिण हारो रे, शि०। जीव कनकसे कर्म कचोरा दहे तप पावकका जोरा रे, शि० ॥२॥

तप तरुवरना कुसुम है ऋद्धि, देव नरनी फल ते सिद्धि रे; शि० । पाप सकल है तमनी राशि, तप भानु से जाये नाशी रे, शि० ॥३॥ जस्स पसाये लहीए वारू, लब्धि सघली जगहितकारू रे, शि० । अति दुक्कर फुण साध्यता हीना, काम ता तें वारू कोना रे; शि० ॥४॥ इच्छारोधन रूपी कहिए, तपपदही चेतन वहीए रे, शिव० । पाठक श्री 'हीरधर्म' कृपा से, नवपद 'कुशला' कुं भासे रे, शि० ॥५॥

—:o:o:—

॥ श्रीतप पद स्तुति ॥

इच्छारोधन तप ते भाख्यो, आगम तेहनो साखी जी;
द्रव्य भावसे द्वादश दाखी, जोगसमाधि राखी जी ।
चेतन निज गुण परिणति पेखो, तेहीज तप गुण दाखी जी ।
लब्धि सकलनो कारण देखी, ईश्वर सेमुख भाखी जी ॥१॥

चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति

अथ नवों पदोंके अलग-अलग चैत्यवन्दन

अथ श्री अरिहंतपद चैत्यवन्दन ।

जय जय श्रीअरिहंत भानु, भवि कमलविकाशी ॥
लोकालोक अरूपी रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥१॥
समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशि ॥
शुक्ल चमर शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी ॥२॥
अंतरंग रिपुगण हणाए, हुय अप्पा अरिहन्त ।
तसु पदपंकजमें रही, हीर धरम नित संत ॥३॥

अथ श्री सिद्धपद चैत्यवन्दन ।

श्री शैलेशी पूर्वप्रांत, तनु हीन त्रिभागी ।
पुव्वपओ गपसंग से, ऊरध गत जागी ॥१॥
समय एकमें लोकप्रांत, गये निगण निरागी ।
चेतन भूपे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥२॥
केवल दंसण नाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ।
सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वंदे धरी शुभ भाव ॥३॥

अथ श्री आचार्यपद चैत्यवंदन।

जिनपदकुल मुखरस अनिल, मितरस गुण धारी।
प्रबल सबल धन मोहकी, जिणते चमुहारी ॥१॥
ऋज्वादिक जिनराज गीत, नय तन विस्तारी।
भव कूपे पापे पड़त, जगजन निस्तारी ॥२॥
पंचाचारी जीव के, आचारजपद सार।
तिनकुं बन्दे हीर धर्म, अट्ठोत्तरसो वार ॥३॥

अथ श्री उपाध्यायपद चैत्यवंदन।

धन धन श्री उवझाय राय, शठता घन भंजन।
जिनवर दिसत दुवालसंग, कर कृत जनरंजन॥१
गुणवणभंजण मण गयंद, सुय शणि किय गंजण।
कुणालंध लोय लोयणे, जत्थय सुय मंजण ॥२॥
महा प्राण में जिन लह्यो ए, आगम से पद तुर्य।
तिनपे अहनिश हीरधर्म, वंदे पाठकवर्य ॥३॥

अथ श्री साधुपद चैत्यवन्दन।

दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी।
धर्म शुक्ल शुचि चक्र से, आदिस खंय कामी ॥१॥

गुण पमत्त अपमत्तते, भये अन्तरजामी ।
मानस इन्द्रिय दमनभूत, शम दम अभिरामी ॥२॥
चारू तिघन गुण गण भर्यो ए, पंचम पद मुनिराज ।
तत्पदपंकज नमत है, हीर धर्म के काज ॥३॥

अथ श्री दर्शनपद चैत्यवन्दन ।

हुय पुग्गल परिपट्ट अड्ड पर मित संसार ।
गंठिभेद तब करी लहे, सब गुणनों आधार ॥१
क्षायक वेदक शशी असंख उपशम पणवार ।
बिना जेण चारित्र नाण, नहीं हुवे शिव दातार ॥२
श्री सुदेव गुरू धर्मनी ए, रूचि लच्छन अभिराम ।
दरशनकुं गणि हीर धर्म, अहनिश करत प्रणाम ॥३

अथ श्री ज्ञानपद चौत्यवन्दन ।

क्षिप्रादिक रस राम वहि, मित आदिम नाण ।
भाव मिलाप से जिन जनित, सुयवीश प्रमाण ॥१
भवगुण पज्जव ओहि दोय, मन लोचन नाण ।
लोकालोक सरूप जान, इक केवल भाण ॥२॥

नाणावरणी नाशथी ए, चेतन नाण प्रकाश ।
सप्तम पद में हीरधर्म, नित चाहत अवकाश ॥३॥

अथ श्री चारित्रपद चैत्यवन्दन ।

जस्स पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेन्द ।
नमन करे शुभभाव लाय, फुण नरपति वृन्द ॥१॥
जंपे धरी अरिहन्त राय, करी कर्म निकन्द ।
सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दे सुख अमन्द ॥२॥
इषु कृति मान कषायथी, रहित लेश शुचिवंत ।
जीव चरित्तकुं हीरधर्म, नमन करत नित संत ॥३॥

अथ श्री तपपद चैत्यवंदन ।

श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण ।
विहि अंतैरपि बाह्य मध्य, द्वादश परिमाण ॥१॥
वसु कर मित आमोसही, आदिक लब्धि निदान ।
भेदे समता युत खिणे, दग्घन कर्म विमान ॥२॥
नवमो श्री तपपद भलो ए, इच्छारोध सरूप ।
वंदन से नित हीरधर्म, दूर भवतु भवकूप ॥३॥

—:०:०:—

अथ नवों पदोंके अलग अलग स्तवन

॥ अरिहन्त पद स्तवन ॥

त्रीजे भव विधि सहित थी, वीश स्थानक तप करी
ने रे।
गोत्र तीर्थंकर बांधियुं, समकित शुद्ध मन धरी
ने रे ॥१॥
अरिहंत पद नित वंदिए, करम कठिन जिम छंडिए रे
॥ ए आंकणी ॥
जनम कल्याणक ने दिने, नारकी सुखिया थावे रे।
मति श्रुति अवधि विराजता, जसु ओपम कोई नावे रे
॥ २ ॥ अ०
दीक्षा लीधी शुभमने, मनः पर्यव आदरीयुं रे।
तप करी कर्म खपाइने, ततखिण केवल वरीयुं रे।
३ ॥ अ०
चउतीश अतिशय शोभता, वाणी गुण पैंतीशो रे।
अठदश दोष रहित थई, पूरे संघ जगीशो रे ॥
४ ॥ अ०

तन मन वयण लगाई ने, अरिहंत पद आराधे रे।
ते नर निश्चय थी सही, अरिहंत पदवी साधे रे॥
५ ॥ अ०

॥ सिद्धपद स्तवन ॥

सकल करम नो क्षय करी, सिद्ध अवस्था पाई रे।
गुण इगतीस विराजता, ओपम जस नहीं कांइ रे॥१
मन शुद्ध सिद्ध पद वंदिए ॥ ए आंकणी ॥
जनम मरण दुःख निर्गम्यां, शुद्धतम चिद्रूपी रे।
अनन्त चतुष्टय धारता, अव्याबाध अरूपी रे॥
२ ॥ मन०
जास ध्यान जोगीसरु, करे अजपा जापे रे।
भवभव संचया जीवडे, कठिन करम ते कापे रे॥
३ ॥ मन०
ध्यान धरंतां सिद्ध नुं, पूजतां मन रागे रे।
अविचल पदवी पाइए, कह्युं जिनवर वड भागे रे॥
४ ॥ मन०

श्री आचार्यपद स्तवन ।

गुण छत्तीसे दीपता, पाले पंच आचारो रे ।
जिनमारग साचो कहे, युगप्रधान जयकारो रे ॥१
आचारज पद वंदिए ॥ ए आंकणी ॥
सारण वारण चोयणा, पडिचोयण चौ शिक्षा रे ।
भव्यजीव समझायवा, देवा ने ते दक्षारे ॥२॥ आ०
जिनवर सूरज आथम्या, परतिख दीपक जेहा रे ।
सकल भाव परगट करे, ज्ञानमयी जसु देहा रे ॥३॥
विधिसुं पूजा साचवे, ध्यावे निज हित जाणी रे ।
पावे लघुतर काल मां, आचारज पद प्राणी रे ॥४॥

श्री उपाध्याय पद स्तवन ।

द्वादशांगी वाणी वदे, सूत्र अर्थ विस्तारे रे ।
पंच वरग गुण जेहना, सुमति गुप्ति नित धारे रे ॥१
श्री उवज्झाया वंदिए ॥ ए आंकणी ॥
दायक आगम वाचना, भेद भाष युत सारी रे ।
मूरख कुं पंडित करे, जगत जन्तु हितकारी रे ॥२॥

शीतल चन्द किरण समो, वाणी जेहनी कहिये रे।
ते उवज्झाया पूजतां, अविचल सुखड़ा लहीए रे ॥३

श्री साधु पद स्तवन ।

सकल विषय विष वारी ने, आतम ध्याने राता रे।
उपशम रसमां झीलतां, निज गुण ज्ञाने माता रे॥१
हित धरी मुनि पद वंदिए ॥ ए आंकणी ॥
रत्नत्रयी आराधतां, षट्काया प्रतिपाले रे।
पचिन्द्री जीपे सदा, जिनमारग उजवाले रे ॥२॥
गुण सत्तावीस अलंकर्या, पंच महाव्रत धारी रे।
द्वादश विध तप आदरे, चिदानन्द सुखकारी रे ॥३
नवविध ब्रह्मचरिज धरे, करम महाभट जीत्या रे।
एहवा मुनि ध्यावे सदा, ते नर जगत विदिता रे ॥४

दर्शन पद स्तवन ।

सुगुरु सुदेव सुधर्म नी, सद्दहणा चित्त धरीए रे।
सात प्रकृति नो क्षय करी, क्षायिक समकित वरीए रे॥
दरसणपद नित वंदीए॥ ए आंकणी ॥

इण विण ज्ञान निःफल कह्युं, चारित्र निःफल जाय रे
शिव सुख ए विण न मिले, बहु संसारी थाय रे ॥२
सड़सट्ठि भेदे शोभतुं, अजरामर फल दाता रे ।
जे नर पूजे भावसुं, ते पामे सुखसाता रे ॥३॥

ज्ञान पद स्तवन ।

भक्ष्य अभक्ष विचारणा, पेय अपेय निर्धारो रे ।
कृत्य अकृत्यने जाणीए, ज्ञान महाजयकारो रे ॥१
ज्ञान निरंतर वंदीए ॥ ए आंकणी ॥
ज्ञान विना जयणा नहीं, जयणा विण नहीं धर्मो रे ।
धर्म विना शिव सुख नहीं, ते विण न मिटे भरमो रे २
पांच प्रकार छे जेहना, भेद इकावन तासो रे ।
जाणी ने पूजे सदा, ते लहे केवल खासो रे ॥३॥

चारित्र पद स्तवन ।

सर्वविरति देशविरति थी, अणगार सागारी रे ।
जयवंतो थावो सदा, ते चारित्र गुणधारी रे ॥१॥
चारित्रपद नित वंदीए ॥ ए आंकणी ॥

षट्खंड सुख तजी आदरे, संयम शिवसुखदायी रे।
सत्तर भेदे जिन कह्यो, ते आदरीए भाई रे ॥२॥
तत्त्वरमण तसु मूल छे, सकल आश्रव नो त्यागी रे।
विधि सेती पूजन करे, भाव धरी वडभागी रे ॥३

॥ श्री तपपद स्तवन ॥

निज इच्छा अवरोधीए, तेहीज तप जिन भाख्युं रे।
बाह्य अभ्यंतर भेद थी, द्वादश भेदे दाख्युं रे ॥१॥
अनुपम तपपद वंदीए ॥ एक आंकणी ॥
तद्भव मोक्षगामीपणुं, जाने पण जिनराया रे।
तप कीधां अति आकरां, कुत्सित करम खपाया रे॥२
करम निकाचित क्षय हुवे, ते तपने परभावे रे।
लब्धि अठ्यावीश ऊपजे, अष्ट महासिद्धि पावे रे ॥३
एहवुं तपपद ध्यावतां, पूजंतां चित्त चाहे रे।
अक्षय गति निर्मल लहे. सहु योगींद सराहे रे ॥४

—:o:o:—

अथ नवों पदोंकी अलग अलग थुइयां

॥ श्री अरिहन्तपद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक स्वरूपो जी।
केवलज्ञान की ज्योति प्रकाशक, अनन्त गुणें करी पूरो जी ॥
तीजे भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरो जी।
बारे गुणां करी एहवा अरिहंत, आराधो गुण भूरोजी॥१

॥ श्री सिद्धपद थुई ॥

अष्ट करमकुं दमन करीने, गमन कियो शिववासीजी।
अव्याबाध सादि अनादि, चिदानन्द चिदराशीजी॥
परमातम पद पूरण विलासी, अघ घन दाघ विनाशीजी
अनंत चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवलज्ञानी भाषीजी॥२

॥ श्री आचार्य पद थुई ॥

पंचाचार पाले उजवाले, दोष रहित गुणधारीजी।
गुण छत्तीसे आगमधारी, द्वादश अंग विचारीजी॥
प्रबल सबल घनमोह हरणकुं, अनिल समो गुणवाणीजी
क्षमा सहित जे संयम पाले, आचारज गुणध्यानीजी॥३

॥ श्री उपाध्याय पद थुई ॥

अंग इग्यारे चउदे पूरब, गुण पचवीस ना धारीजी।
सूत्र अरथ घर पाठक कहिए, जोग समाधि विचारीजी
तप गुण सूरा आगम पूरा, नय निक्षेपे तारीजी ॥
मुनि गुणधारी बुध विस्तारी, पाठक पूजोअविकारी
जी ॥४॥

॥ श्रीसाधुपद थुई ॥

सुमति गुपति कर संजमपाले, दोष बयालीस टालेजी
षट्काया गोकुल रखवाले, नवविध ब्रह्मव्रतपालेजी ॥
पंच महाव्रत सूधापाले, धर्म शुक्ल उजवाले जी।
क्षपकश्रेणी करी कर्म खपावे, दमपद गुण उपजावेजी ॥५

॥ दर्शन पद थुई ॥

जिन पन्नत्त तत्त सूधासरधे, समकित गुणउजवालेजी
भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुर पावेजी
प्रत्याख्याने समतुल्य भाख्यो, गणधर अरिहंतशूराजी
ए दर्शनपद नित-नित वन्दो, भवसागरको तीराजी॥६

॥ ज्ञानपद थुई ॥

मति श्रुति इन्द्री जनित कहिये, लहिये गुण गंभीरोजी
आतमधारी गणधर विचारी, द्वादश अंग विस्तारोजी ॥
अवधि मनःपर्यव केवल वली, प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी ।
ए पंच ज्ञान कुं वंदो पूजो, भविजनने सुखकारोजी॥७

॥ चरित्रपद थुई ॥

कर्म अपचय दूर खपावे, आतम ध्यान लगावेजी ।
बारे भावना सूधी भावे, सागर पार उतारेजी ॥
षट्खंड राज कुं दूर तजीने, चक्री संयम धारेजी ।
एहवो चारित्रपद नित वंदो, आतमगुण हितकारेजी॥८

॥ तपपद थुई ॥

इच्छारोधन तप ते भाख्यो, आगम तेहनो साखीजी
द्रव्यभावसें द्वादश दाखी, जोग समाधि राखीजी ॥
चेतन निज गुण परिणति पेखो, तेही तप गुण दाखी जी ॥
लब्धि सकलनो कारण देखी, ईश्वर सैंमुख भाखी जी ॥ ९ ॥

॥ नवपद चैत्यवन्दन ॥

सकल मंगल परम कमला, केलि मंजुल मंदिरं ।
भवकोटि संचित पापनाशन, नमो नवपद जयकरं।१
अरिहंत सिद्ध सूरीश वाचक, साधु दर्शन सुखकरं।
वर ज्ञानपद चारित्र तप ए, नमो नवपद जयकरं॥२
श्रीपाल राजा शरीर साजा, सेवतां नवपद वरं ।
जग मांहि गाजा कीर्तिभाजा, नमो नवपद जयकरं ३
श्रीसिद्धचक्र पसाय संकट, आपदा नासे सवे ।
वलि विस्तरे सुख मनोवांछित, नमो नवपद जयकरं ४
आयंबिल नवदिन देववंदन, त्रण टंक निरंतरं ।
बे वार पडिकमणां पलेवण, नमो नवपद जयकरं॥५
त्रंण काल भावे पूजीए, भव तारकं तीर्थंकरं ।
तिम गुणणुं दोय हजार गणीये, नमो नवपद जयकरं ६
विधि सहित मन वचन काया, वश करी आराधिये
तप वर्ष साढ़ा चार नवपद, शुद्ध साधन साधिये॥७
गद कष्ट चूरे शर्म पूरे, यक्ष विमलेश्वर वरं ।
श्री सिद्धचक्र प्रताप जाणी विजय विलसे सुखभरं॥८

श्री नवपद चैत्यवन्दन ॥ २ ॥

श्री सिद्धचक्र आराधिये, आसो चैतर मास।
नवदिन नव आंबिल करी, कीजे ओली खास ॥१
केसर चन्दन घसी घणां, कस्तूरी बरास।
जुगते जिनवर पूजिया, मयणा ने श्रीपाल ॥२॥
पूजा अष्ट प्रकारनी, देववन्दन त्रण काल।
मन्त्र जपो त्रणकाल ने, गुणणुं तेर हजार* ॥३॥
कष्ट टल्युं उंबर तणुं, जपतां नवपद ध्यान।
श्री श्रीपाल नरिंद थया, वाध्यो बमणो वान ॥४॥
सातसो कोढ़ी सुख लह्यो, पाम्या निज आवास।
पुण्ये मुक्ति वधु वर्या, पाम्या लील विलास ॥५॥

---

*—अरिहन्तके (१२), सिद्धके (८), आचार्यके (३६), उपाध्यायके (२५), साधुके (२७), ज्ञानके (५), दर्शनके (५), चारित्रके (१०), तपके (२), कुल १३० भेदोंकी एक-एक नवकारवाली गिननेसे (उसके १०० की गिनती मानी जाने के कारण) १३००० गुणणा होता है।

(नोट) माळाके मनके १०८ होते हैं अतः पूरी माळा ही गिनना चाहिये। कम नहीं।

श्री नवपद चैत्यवन्दन ॥ ३ ॥

उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडिहेरासण संठियाणं ।
सद्देसणाणंदियसज्जणाणं, नमो २ होउ सया जिणाणं।१
सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं
सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं, नमो २ सूर समप्पहाणं ॥२
सुतत्थवित्थारण तप्पराणं, नमो २ वायग कुंजराणं।
साहूण संसाहिअ संजमाणं, नमो २ सुद्ध दयादमाणं।३
जिणुत्त तत्तो रुइलक्खणस्स, नमो २ निम्मलदंसणस्स।
अन्नाणसंमोह तमोहरस्स, नमो २ नाणदिवायरस्स ॥४
आराहिअ खंडिय सक्किअस्स, नमो २ संयम वीरिअस्स
कम्मद्दुमोम्मूलण कुंजरस्स, नमो २ तिव्वतवोभरस्स ।५

इय नवपय सिद्धं लद्धि विज्जासमिद्धं,
पयडिय सरवग्गं ह्रीं तिरेहा समग्गं।
दिसिवइसुरसारं, खोणिपीढावयारं,
तिजयविजयचक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥६॥

श्री नवपद चैत्यवन्दन ॥ ४ ॥

जो धुरि सिरि अरिहन्त मूल, दृढपीढ पइट्ठिओ ।
सिद्धि सूरि उवज्झाय साहु, चिहुँ साहगरिट्ठिओ ॥१॥
दंसण नाण चरित्त तवहिं, पडिसाहे सुन्दरू ।
तत्तक्खर सरवग्ग लद्धि, गुरुपय दल डंबरू ॥२॥
दिसिवाल जक्खजक्खिणीपमुह-सुरकुसुमेहिं अलंकियऊ
सो सिद्धचक्क गुरु कप्पतरु-अम्ह मनवंछिय दियऊ ॥३

श्री नवपद चैत्यवन्दन ॥ ५ ॥

श्री अरिहन्त उदार कांति, अति सुन्दर रूप ।
सेवो सिद्ध अनन्त शांत, आतम गुण भूप ॥१॥
आचारज उवज्झाय साधु, समता रस धाम ।
जिन भाषित सिद्धांत शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥२
बोधिबीज गुण संपदा ए, नाण चरण तव सुद्ध ।
ध्यावो परमानन्द पद, ए नव पद अविरुद्ध ॥३
इह पर भव आनन्द कन्द, जग मांहि प्रसिद्धो ।
चिन्तामणि सम जास जोग, बहू पुण्ये लद्धो ॥४
तिहुअण सार अपार एह, महिमा मन धारो ।

परिहर पर जंजाल जाल, नित एह सम्भारो ॥५

सिद्धचक्र पद सेवतां, सहजानन्द स्वरूप ।

अमृतमय कल्याण निधि, प्रगटे चेतन भूप ॥६

श्री नवपद चैत्यवन्दन ॥ ६ ॥

पहले दिन अरिहंतनुं, नित्य कीजे ध्यान ।

बीजे पद वलि सिद्धनुं, कीजे गुण गान ॥ १ ॥

आचारज त्रीजे पदे, जपतां जय जयकार ।

चौथे पदे उपाध्यायना, गुण गाओ उदार ॥ २ ॥

सकल साधु वन्दो सही, अढ़ीद्वीप मां जेह ।

पंचम पद आदर करी, जपजो धरी ससनेह ॥ ३ ॥

छठे पदे दर्शन नमो, दरिसन अजुआलो ॥

नमो नाण पद सातमे, जिम पाप पखालो ॥ ४ ॥

आठमे पद आदर करी, चारित्र सुचंग ।

पद नवमें बहु तप तणो, फल लीजे अभंग ॥ ५ ॥

एणी परे नवपद भावसुं ए, जपतां नव-नव कोड़ ।

पंडित शान्ति विजय तणो, शिष्य-कहे कर जोड़ ॥६

श्री नवपद चैत्यवन्दन ॥ ७ ॥

सुललित नवपद ध्यान थी, परमानन्द लहिये ।
ध्यान अग्नि थी कर्म ना, इन्धन पुण दहिये ॥१॥
ईति भीति ने रोग शोक, सवि दूर पणासे ।
भोग संजोग सुशुद्धिता, प्राप्त सुविलासे ॥२॥
सिद्धचक्र तप कीधतां ए, उत्तम प्रभुता संग ।
मोहन नाण प्रसिद्धता, गंगा रंग तरंग ॥३॥

श्री नवपद चैत्यवन्दन ॥ ८ ॥

श्री सिद्धचक्र महामन्त्र राज, पूजा परसिद्ध ।
जास नमन थी संपजे, सम्पूरण रिद्ध ॥ १ ॥
अरिहंतादिक नवपद, नित्य नवनिधि दाता ।
ए संसार असार सार, होये पार विख्याता ॥ २ ॥
अमराचल पद संपजे, पूरे मन ना कोड ।
मोहन कहे विधियुत करो, जिम होय भवनो छोड ॥३

श्री नवपद चैत्यवन्दन ॥ ९ ॥

बार गुण अरिहंत ना, तेम सिद्ध ना आठ ।
छत्रीस गुण आचार्य ना, ज्ञान तणा भंडार ॥१॥

पच्चीस गुण उपाध्याय ना, साधु सत्तावीश
श्यामवर्ण तनु शोभता, जिन शासन ना ईश ॥२
ज्ञान नमुं एकावने, दर्शन ना सडसठ
सित्तेर गुण चारित्रना, तप बारे ते जिट्ठ ॥३॥
एम नवपद युक्ते करी, त्रण शत अष्ट गुणथाय(३०८)
पूजे जे भवि भावशुं, तेहना पातक जाय ॥४॥
पूज्या मयणासुन्दरी, तेम नरपति श्रीपाल।
पुण्ये मुक्ति सुख लह्या, वरत्या मंगल माल ॥५॥

॥ अथ नवपद वृद्धस्तवन ॥

सुरमणि सम सहु मंत्रमां, नवपद अभिरामी रे लोय॥ अहो नव० ॥ करुणासागर गुण निधि, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो जग० ॥१॥ त्रिभुवन जन पूजित सदा, लोकालोक प्रकाशी रे लोय ॥ अहो लोका० ॥ एहवा श्री अरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥२॥ अष्ट करमदल क्षय करी, थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे अगम अरूपी रे लोय ॥

अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे शोभता, सुन्दर सुखकारो रे लोय ॥ अहो सुं० ॥ आचारज तीजे पदे, वंदु अविकारी रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दुविध आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चौथे पद पद पाठक नमो, संवेग समाधि रे लोय ॥ अहो सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालणपरा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अहो पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमे, प्रणमुं वडभागी रे लोय ॥ अहो प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणने ओलखे, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय ॥ अहो श्रु० ॥ छठे गुण दरशण नमो, आतम शुभ भावे रे लोय ॥ अहो आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे लोय ॥ अहो जे० ॥ ८ ॥ आठमे चारित्र-पद नमो, परभाव निवारी रे लोय ॥ अहो प० ॥ खंत्यादिक दश धर्मनो, जेह छे अधिकारी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ९ ॥ नवमे वली तपपद नमो, बाह्याभ्यंतर भेदे रे लोय ॥ अहो बा० ॥ बांध्या काल अनन्तनां, जे कर्म उच्छेदे रे लोय ॥अहो जे०॥१०॥

ए नवपद बहु मानथी, ध्यावे शुभ भावे रे लोय ॥
अहो ध्या० ॥ नृप श्रीपाल तणी परे, मनवंछित
पावे रे लोय ॥ अहो म० ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक
मासमां, नव आंबिल करीये रे लोय ॥ अहो न० ॥
नव ओली विधियुत करी, शिवकमला वरीए रे लोय ॥
अहो शि० ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनो बहु परे, वर
महिमा कीजे रे लोय ॥ अहो व० ॥ श्री जिनलाभ
कहे सदा, अनुपम जश लीजे रे लोय ॥ अहो अ० १३

॥ अथ नवपद स्तवन ॥

(राग मारु)

तीरथनायक जिनवरुजी, अतिशय जास अनुप ।
सिद्ध अनन्त महागुणीजी, परमानंद सरूप ॥१॥
भविक मन धारजो रे, धारजो नवपद ध्यान ॥भ०॥
श्री आचारज गणधरु रे, गुण छत्तीश निवास ॥
पाठक पदधर मुनिवरुजी, श्रुतदायक सुविलास ॥२॥
सुमति गुपतिधर शोभताजी, साधु समतावंत ।
सम्यग्दर्शन सुन्दरुजी, ज्ञानप्रकाश अनन्त ॥३॥

संवर साधना चरण छै रे, तप उत्तम विधि होय ।
ए नव पदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥४॥
अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ।
अविचल अनुभव कारणे रे, नित प्रति नमत कल्याण
भ० ॥ ५ ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

(राग प्रभाती)

नव पद ध्यान धरो रे ॥ भविका न० ॥ मन वच्च काया
कर एकंते, विकथा दूर हरो रे ॥ भ० न० ॥ १ ॥
मंत्र जड़ी अरु तंत्र घणेरा, इन सबकुं विसरो रे ॥
अरिहंतादिक नवपद जपने, पुण्यभंडार भरो रे ॥
भ० न० ॥ २ ॥ अड सिद्ध नवनिध मंगलमाला,
संपत्ति सहज वरो रे॥ लालचन्द याकी बलिहारी,
शिवतरु बीज खरो रे ॥ भ० न० ॥ ३ ॥

नवपद थुई ॥ १ ॥

नित प्रति हुं प्रणमुं, सिद्धचक्र शुभ भाव ।
हिव कारज सिद्धिनो, लाधो एह उपाय ॥

तुज नाम पसाये, आरति व्याधि पुलाय।
इग तुज अनुग्रहथी, सुख सम्पत्ति मुज थाय ॥१
श्री अरिहंत नमीए, सिद्ध सूरि उवझाय।
मुनिवर त्रिक करणे, दंसण नाण सुहाय ॥
दुगविध चारित्ते, बुध विध तप मन भाय।
ए नवपद ध्यावतां, निरुपम शिवसुख थाय ॥२॥
विद्यापरवादे, जाणो ए अधिकार।
श्री गुरु उपदेशे, सिद्धचक्र उद्धार ॥
प्रवचन अनुसारे, भाख्यो एह विचार।
भविजन नित ध्यावो, सुरतरु गुणभंडार ॥३
जिनधरम अनुरागी, चक्केसरी सुखकार।
सेवकने आपे, सुख सम्पत्ति परिवार ॥
हिव निधि उदयकरी, चारित्रनंदी मन भाय।
जिनचंद सूरीसर, खरतरपति सुपसाय ॥४

नवपद थुई ॥ २ ॥

अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो,
आचारज वाचक साहु नमो;

दर्शन ज्ञान चारित्र नमो,
तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥१॥
अरिहंत अनंत थया थाशे,
वली भाव निक्षेपे गुण गाशे;
पडिक्कमणा देववंदन विधिशुं.
आंबिल तप गणणुं गणो विधिशुं
छ री पालीने जे तप करशे,
ते श्रीपाल तणी परे भव तरशे;
सिद्धचक्रने कुण आवे ? तोले,
एहवा निज आगम गुण बोले ॥३॥
साडा चार बरसे ए तप पूरो,
ए कर्म विदारण तप शूरो।
सिद्धचक्रने मनमंदिर थापो,
नय विमलेसर वर आपो ॥४॥

नवपद थुई ॥ ३ ॥

निरुपम सुखदायक जगनायक;
लायक शिवगति गामी जी,

करुणा सागर निजगुण आगर;
शुभ समता रस धामी जी।
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर;
ध्यावे जे मन रंगे जी,
ते मानव श्रीपाल तणी परे;
पामे सुख सुर संगे जी ॥१॥
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक;
साधु महा गुणवंता जी,
दरिसण नाण चरण तप उत्तम;
नवपद जग जयवंता जी।
एहनुं ध्यान धरंतां लहिये;
अविचल पद अविनाशी जी,
ते सघला जिन नायक नमिये;
जिणे ए नीति प्रकाशी जी ॥२॥
आसू मास मनोहर तिम वलि;
चैत्रक मास जगीसे जी,
उजवाली सातमथी करिये;

नव आंबिल नव दिवसे जी।
तेरे सहस वलि गुणिये गुणणो,
नव पद केरो सारो जी,
इणि परि निर्मल तप आदरिये;
आगम साख उदारो जी ॥३॥
विमल कमल दल लोयण सुन्दर;
श्री चक्केसरि देवी जी,
नवपद सेवक भविजन केरा;
विघ्न हरो सुर सेवी जी।
श्रीखरतरगच्छ नायक सद्गुरु;
श्रीजिनभक्ति मुणिंदा जी,
तासु पसाये इणि परे पभणे;
श्रीजिनलाभ सुरिंदा जी ॥४॥

श्री विनय विजयजी कृत ॥

आंबिल तपनी सज्झाय ॥

समरी श्रुत देवी शारदा, सरस वचन वर
आपे सदा ॥ आंबिल तपनो महिमा घणो, भवि
जन भाव थकी ते सुणो ॥१॥ विगय सकलनो
जिहां परिहार, अशन मांहि घणो भेद विचार ॥
विदल सर्व तिल तूयर विना, अलसी कोद्रव
कांगनी मना ॥२॥ खडधान पुंहक डूकट फल
सर्व, वर्जीजे आंबिलने पर्व । ऊसामण परे जो
जल भले, तो आंबिल अंबिल रस टले ॥३॥
बिलवण सूँठी मरीच ने सूआ, मेथी संचल राम-
ठजुआ । अजमादिक भेला रंधाय, तो आंबिलम.
लेवा थाय ॥४॥ जीरुं भले ते जेवडी कही, ते
सूजे पण जीरुं नहीं । गोमूत्र विना अछे अणा-
हार, ते सवि लेवानो विवहार ॥५॥ सात जाति जे

तंडुल तणी, ते सूजंती आंबिलमां भणी। सेकिल धान अपक्की दाल, मांडा खाखर लेवा टाल ॥६॥ हलदर लविंग पीपर पींपली, हरडे सैंधव वेसण वली। खादिम स्वादिम जे कहेवाय, ते आंबिलमां नवि लेवाय ॥७॥ उत्कृष्ट विधे उष्ण जल नीर. जघन्य विधे कांजीनुँ नीर। इम निरदूषण आंबिल करे, मुखधोवण दातण नवि करे ॥८॥ जे निरदूषण लीए आहार, ओदननो तेहने विवहार। आटो लिंगट पाणीवलुं, ते पण आंबिलमां सूझतुं ॥९॥ अशठ गीतारथ अणमच्छरी, जे जे विधि बोले ते खरी। लाभालाभ विचारे जेह, विधि गीतारथ कहीए तेह ॥१०॥ आंबिल तप उत्कृष्टो कह्यो, विघन विदारण कारण लह्यो। वाचक कीर्त्तिविजय सुपसाय, भाखे विनयविजय उवज्झाय ॥११॥ इति आंबिलमां आहार लेवानी विधि सज्झाय ॥

—:o:—

श्री सिद्धचक्रजीकी आरती ॥

श्री नवपद प्राणी नित्य-ध्यावो,
पञ्चमगति सासय सुख पावो ॥ श्री नवपद० ॥
धुरथी अरिहन्त पद ध्याइजे,
स्थिरताए श्री सिद्ध थुणीजे ॥श्री नवपद०॥१॥
आचारज त्रीजे आराधो,
शुद्ध मने निज कारज साधो ॥श्री नवपद०॥२॥
उपाध्याय पंचम अणगारा,
प्रणमंता पामे भवपारा ॥श्री नवपद ॥३॥
दंसण नाण चरण भला दीपे,
तप तपतां कर्म अरिने जीपे ॥श्री नवपद० ॥४॥
ए नवपद प्राणी नित्य थुणतां,
गिरुवा नरभव सफल गणंता ॥श्री नवपद०॥५॥
श्री सिद्धचक्रनी कीजे सेवा,
मनवांछित लहीये नित्य मेवा ॥श्री नवपद०॥६॥
अजर अमर सुखदायक साचो,
रूडा मनथी नित्य-नित्य राचो ॥श्री नवपद०॥७॥

अथ मंगल दीवा

दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो,
आरती उतारी ने बहु चिरंजीवो ॥ दी० ॥ १ ॥
सोहामणो घेर पर्व दिवाली,
अंबर खेले अमरा नारी, ॥ दी० ॥ २ ॥
दीपाल भणे इणें अजुआली,
भावे भगते विघ्न निवारी ॥ दी० ॥ ३ ॥
दीपाल भणे इणें कलिकाले,
आरती उतारी राजा कुमार पाले ॥ दी० ॥ ४ ॥
तुम घर मंगलिक, अम घर मंगलिक,
मंगलिक चतुर्विधि संघ ने होजो ॥ दी० ॥ ५ ॥

ओली में उपयोगी पच्चक्खाण

आयंबिलका पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पोरिसी साढ पोरिसी सूरे उग्गए पुरिमड्ढ अवड्ढ मुट्ठि सहियं पच्चक्खाइ

उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थाणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिल पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चक्खाइ[1] तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ[2] ।

१—ठाम् चउविहार करना हो तो "एकलठाणं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं" इस तरह बोलें ।

२ साथ में देसावगासियं पच्चक्खाणं लेना हो तो "देसावगासियं उवभोगपरिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।" यह पच्चक्खाण भी साथ बोलें ।

आयंबिलके पश्चात मुखशुद्धि करनेके बाद उठते समय

तिविहार का पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइयं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ ।

मुट्ठिसहियं का पच्चक्खाण

मुट्ठिसहिय [1] पच्चक्खाइ अन्नत्थाणभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

पाणहार का पच्चक्खाण

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ ।

पारणेके दिनका एकासणे बियासणे कापच्चक्खाण

—)०(—

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पोरिसी साढ पोरिसी मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं

१—गंठसी, वेढसी, आदि पच्चक्खाण करना हो तो वह पाठ बोलें

असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सह-सागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं विगइ ओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवाले-वेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खितविवेगेणं पडुच्चम क्खियेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं ऐगासणं[१] बियासणं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरु अब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणिया गारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्य लेवेण वा अलेवेण वा बहु लेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ।

अक्षयनिधि तपविधि

श्री जिनेश्वर देव के सामने कुम्भ स्थापन कर उसे अक्षतों (चावलों) की मुट्ठी से प्रत्येक

१- यदि बियासणा ही करना होतो 'एगासणं, न बोलें, यदि एकासणा करना हो तो बियासणं न बोलें।

दिन भरना चाहिये। जितने दिनों में यह भरा जाय उतने दिनों तक शक्ति अनुसार जो तप किया जाता है, उसे "अक्षय निधि" तप कहतेहैं।

इस तप को भादवा वदि ४ से शुरु कर भादवा सुदी ४ संवच्छरीके दिन (सोलह दिनोंमें) समाप्त करना चाहिये। यह तप चार वर्षों में पूर्ण होता है। प्रत्येक वर्ष सोलह-सोलह दिन तप करने से ६४ दिनों में सम्पूर्ण होता है।

तपविधि क्रम

सोना, चाँदी, तांबा अथवा किसी भी धातु का कलश अपनी शक्ति अनुसार बनवाये अथवा मिट्टी का कुम्भ भी ले सकते हैं। इस कुम्भ पर चित्र होना चाहिये। जिनमंदिर, उपाश्रय अथवा किसी भी पवित्र स्थान में त्रिगड़ा सिंहासन रख कर उसमें श्री जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा विधि पूर्वक स्थापन करें। प्रतिमाजी का विधि पूर्वक अष्ट द्रव्यों से पूजन करें। सिंहासन के

सामने धूप दीप स्थापन करें । जहाँ कुम्भ स्थापन करना हो उस जगह को गाय के गोबर से लीप लें। उस पर धान की ढगली रखें, इस पर कलश को स्थापन करें। कलश पर नारियल रख कर हरे रंग अथवा पीले रंग के वस्त्र से उसे ढांकें और मौलीसे उसे बांध दें। सोलह दिन इस घट को हिफाजत से रखें।

यदि बहुत श्रावक-श्राविकाएं तपस्या करनेवाले हों तो वे सब अपना-अपना एक-एक घट ऊपर लिखी विधि अनुसार पृथक पृथक स्थापन करें। हर रोज अक्षत, बादाम, सुपारी तथा यथाशक्ति नकदी घटमें डालें। अक्षत वगैरह इस प्रकार डालें कि घट सोलहवें दिन पूरा भर जाय। घटके समीप घी का दीपक अखंड सोलह दिन स्थापन करे। और कलशके आगे स्वस्तिक करके श्री कल्पसूत्रजीकी स्थापना करें।

यदि बहुतसे लोग तपस्या करें तो और एक

कुम्भकी स्थापना भी विधि पूर्वक पृथक् (समूहकी तरफसे) करना चाहिये। और उस कुम्भमें सब तपस्वी प्रति दिन इस प्रकार चावल बादाम आदि डालें कि वह घट सोलहवें दिन सम्पूर्ण भर जावे। इस कुम्भके सामने भी अष्ट द्रव्य चढ़ावें।

जहां तप किया करें उसके आस पास १००-१०० हाथ जगह शुद्ध रखनी चाहिये। यदि स्त्री वर्ग चार दिन दूर हो जाँय तो संवत्सरीके बाद चार दिन तक क्रिया सहित तप करें बादमें पारणा करें। और महोत्सवमें पंचमीके रोज तक एक साथ शामिल रहें।

तपस्वियोंको हर रोज करनेकी क्रिया

१—सुबह और शाम प्रतिक्रमण और पड़िलेहण करें।

२—संथारा करके भूमि पर सोयें और ब्रह्मचर्यका पालन करें।

३—रोज देव पूजा और ज्ञान पूजा करें। कारण वस न बन सके तो प्रथम तथा अन्तिम दिन यथाशक्ति पूजन करें।

४—सुबह, मध्यान्ह तथा सायंकाल देव वंदन करें।

५—यदि संयोग बन सके तो गुरु वन्दन और व्याख्यान सुनना चाहिये।

६—संयोग बन सके तो गुरुके मुरतसे पच्चक्खाण करना चाहिये।

७—हर रोज एकासनेका पच्चक्खाण करना ही चाहिये और संवच्छरीके दिन उपवास करना चाहिये यदि उत्कृष्ट तप करना हो तो एकान्तर उपवास-एकासना आदिका भी पच्चक्खाण कर सकते हैं।

८—रोज बीस प्रदक्षिणा देनी, ५१ अथवा ५ साथिये करना।

९—रोज बीस नवकारवाली "नमो नाणस्स" पद की फेरें।

१०—रोज बीस लोगस्सका काउसग्ग करें।

११—रोज क्रिया करनेके बाद अक्षत, कुछ बादाम, इलायची तथा सुपारी अपने-अपने घड़ेमें इस प्रकार डालें कि घड़ा सोलहवें दिन सम्पूर्ण भर जावे।

१२—रोज अक्षयनिधि कुम्भ तथा भगवानके सामने प्रभातमें तथा सायंकाल मंगल गीत गाना चाहिये।

भादवा सुदि ५ के दिनका कार्यक्रम

पारणेके दिन अक्षयनिधि कुम्भको फूलोंकी मालाओंसे सजाकर सौभाग्यवती स्त्रियोंके मस्तक पर रखें और इसी प्रकार तपस्यावाली स्त्रियां अपने अपने कुम्भको सजाकर सौभाग्यवती स्त्रियोंके मस्तक पर रखें और एक थाली अथवा शक्ति हो तो ५-५ थालियां जिनमें फल, फूल अथवा नैवेद्य आदि सजाकर तथा एक थालीमें कल्पसूत्र सजाकर सौभाग्यवती स्त्रियोंके मस्तक पर रखें। बादमें धूम-धामके साथ रथयात्रा निकालें। सर्व संघ

बाजा वगैरह शक्ति अनुसार हाथी, घोड़ा, सजावट करके गांवमें घूमकर मंदिरजी में जावें । कुम्भ और नैवेद्य आदि धारण करने वाली स्त्रियाँ भगवान को तीन प्रदक्षिणा देकर कुम्भ और नैवेद्य यथा स्थान पर वापिस रखें । यदि गुरु महाराज हों तो कल्पसूत्र को गुरु के सम्मुख रख कर विशेष प्रकार से ज्ञान की पूजा करें । गहुंली करके गुरु को वन्दन करें और गुरु के पास से वासक्षेप लें । प्रभावना देकर रथयात्रा विसर्जन करें । साधर्मी-वात्सल्य करें ।

श्री आदीश्वर भगवानकी आरती

अपछरा करती आरती जिन आगे,
हां रे जिन आगे रे जिन;
हां रे ए तो अविचल सुखडा मांगे
हां रे नाभिनन्दन पास अ० ॥१॥
ता थेइ नाटक नाचती पाय ठमके,
हां रे दोय चरणे झांझर झमके,

हां रे सोवन घुंघरी घमके,
हां रे लेती फुदड़ी बाल। अ० ॥२॥
ताल मृदंग ने वांसली डफ बीणा,
हां रे रुडा गावंती स्वर झीणा,
हां रे मधुर सुरासुर नयणा,
हां रे जोती मुखडुं निहाल। अ० ॥३॥
धन्य मरुदेवा मातने प्रभु जाया,
हां रे तोरी कंचन वरणी काया,
हां रे में तो पूरब पून्ये पाया,
हां रे देख्यो तोरो देदार। अ० ॥४॥
प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो,
हां रे प्रभु सेवक छुं हुँ तारो,
हां रे भवोभवना दुःखड़ा वारो,
हां रे तुम दीनदयाल। अ० ॥५॥
सेवक जाणी आपनो चित्त धरजो,
हां रे मोरी आपदा सघली हरजो,
हां रे मुनिमाणेक सुखियो करजो,
हां रे जानी पोतानो बाल। अ० ॥६॥

श्री अक्षयनिधि तपकी विधि।

प्रथम इर्यावही करके "इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अक्षयनिधि तप आराधन निमितं चैत्यवंदन करू" इच्छं कह कर दोनों हाथ जोड़ कर नीचे का पाठ कहे :—

शासन नायक सुखकरण, वर्धमान जिनभाण।
अहनिश एहनी शिर वहूं, आणा गुणमणिखाण ॥१
ते जिनवरथी पामीया, त्रिपदी श्री गणधार।
आगम रचना बहु विध, अर्थ विचार अपार ॥२॥
ते श्री श्रुतमां भाषियाए, तप बहु विधि सुखकार।
श्री जिन आगम पामीने, साधे मुनि शिव सार ॥३
सिद्धांतवाणी सुणवा रसिक, श्रावक समकित धार।
इष्ट सिद्धि अर्थे करे, अक्षय निधि तप सार ॥४॥
तप तो सूत्रमां अति घणा, साधे मुनिवर जेह।
अक्षय निधानने कारणे श्रावकने गुण गेह ॥५॥
ते माटे भवी तप करोए, सर्व ऋद्धि मले सार।
विधिशुं एह आराधतां, पामीजे भवपार ॥६॥
श्री जिनवर पूजा करो, त्रिक शुद्धे त्रिकाल।

तेम वली श्रुतज्ञानननी, भक्ति थइ उजमाल ॥७॥
पडिकमणां बे टंकना, ब्रह्मचर्यने धरीए।
ज्ञानीनी सेवा करी, सहेजे भवजल तरीए ॥८॥
चैत्यवंदन शुभ भावथीए, स्तवन थोइ नवकार।
श्रुतदेवी उपासना, धीरविजय हितकार ॥९॥

बाद "जंकिंचि०" कहकर "नमोत्थुणं" कहे बाद जावंति के० और नमोऽर्हत० कहकर स्तवन कहेः—

॥ स्तवन ॥

(लावो लावोने राज मोंघा मूलां मोती--ए देशी)

तपवर कीजे रे, अक्षय निधि अभिधाने;
सुखभर लीजेरे, दिन दिन चढ़ते वाने० (ए आंकणी)
पर्व पजूसण पर्व शिरोमणि, जे श्री पर्व कहाय।
मास पाख छठ दसम दुवालस, तप पण ए दिन थांय १
पण अक्षयनिधि पर्व पजूसण, केरो कहे जिन भाण।
श्रावण[1] वद चोथे प्रारंभी, संवच्छरी परिमाण ॥२
ए तप करतां सर्व ऋद्धि वरे, पग पग प्रगटे निधान।
अनुक्रमे पामे तेह परम पद, सान्वयी नाम प्रधान ॥३

१—मारवाडी भादों वदी ४

परमत्सरथी कर्म बंधाणुं, तेणे पामी दुःखजाल।
ए तप करतां ते पूर्वनुं, कर्म थयुं विसराल ॥४॥
ज्ञान-पूजा श्रुत-देवी काउसग्ग, स्वस्तिक अति सोहावे।
सोवन कुंभ जड़ित निजशक्ति, संपूरण क्रमे थावे ॥५
जघन्य मध्यम उत्कृष्टथी करीए, इग दोय तीन वरीस।
वरस चोथे श्रुतदेवी निमित्ते, ए तप वीसवावीश ॥६
एणे अनुसारे ज्ञानतनुं वर, गणणुं गणीए उदार।
आवश्यकादि करणी संयुत, करतां, लहे भवपार ॥७
इह भव परभव दोष आशंशा, रहित करो भवि प्राणी।
जे पर पुद्गल ग्रहण न करवुं, ते तप कहे वरनाणी ॥८
रातिजगा पूजा परभावना, हय गय रथ शणगारीजे।
पारणा दिन पंच शब्दे वाजे, बाजंते पधरावीजे ॥९
चैत्य विशाल होय तिहां आवी प्रदक्षिणा वली दीजे।
कुंभ विविध नैवेद्य संघाते, प्रभु आगल ढोइजे ॥१०
राधनपुरे ए तप सुणी बहु जण, थया उजमाल तप काज
एह मुख्य मंडाण ओछवमां, मसालीया देवराज ११
संवत अढार तेंताली बरसे, ए तप बहु भवी कीधो।
श्री जिन उत्तम पद पसाये, पद्मविजय फल लीधो १२

॥ इति ॥

फिर "जयविराय, कहकर सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं "अन्नत्थ एक नवकारका काउस्सग्ग करे" नमोऽर्हत्०" कहकर स्तुति कहे :—

॥ स्तुति ॥

सुयदेवया भगवई, नाणावरणीय कम्म संघायं ।
तेसिं खवेऊ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ति ॥१॥

स्तुति कहकर बादमे एकासनाका पच्चक्खान करें। बादमें इस पुस्तकके पृ० ८५ से ८७ तक ज्ञान पूजा पढ़ें।

ॐ ह्रीं परमात्मने नमः ज्ञान पदेभ्यः कलशं यजामहे स्वाहा ॥

इस मन्त्रको बोलकर ज्ञानके (पुस्तकके) चारों तरफ जलधारा देवे। वासक्षेप पुजा करे और द्रव्य चढ़ावें। बादमें २० खमासमण दे।

पीठिकाके दोहे

सुखकर शंखेश्वर नमी, थुणश्युं श्री श्रुतनाण ।
चउ मुंगा श्रुत एक छे, स्वपर प्रकाशक भाण ॥
अभिलाप्य अनंतमें, भागे रचियो जेह ।
गणधर देवे प्रणमीओ, आगम रयण अछेह ॥

इम बहुली वक्तव्यता, छठाण वडीया भाव ।
क्षमाश्रमण भाष्ये कह्या, गोपय सर्पि जमाव ॥
लेशथकी श्रुत वरणवुं, भेद भला तस बीश ।
अक्षयनिधि तपने दिने, क्षमाश्रमण ते वीश ॥
सूत्र अनंत अर्थ मई, अक्षर अंश लहाय ।
श्रुत केवली केवली परे, भाखे श्रुत परजाय ॥
(प्रथमभेद)

श्री श्रुतज्ञानने नित नमो, भाव मंगलने काज ।
पूजन अर्चन द्रव्यथी, पामो अविचल राज ॥१॥

(इच्छामि खमासमणो० बोलके खमासमण दे यहासे आगे एक-एक दोहा बोले और श्रीश्रुतज्ञान० दोहा बोलके खमासमण दे)

इग सय अडवीस स्वरतणां, तिहां अकार अढार ।
श्रुत पर्याय समासमें, अंश असंख्य विचार ॥२॥
बत्रीश वर्ण समाय छे, एक सिलोक मझार ।
तेमांहे एक अक्षर ग्रहे, ते अक्षर श्रुत सार ॥३॥
क्षयोपशम भावे करी, बहु अक्षरनो जेह ।
जाणे ठाणांग आगले, ते श्रुत निधि गुणगेह ॥

कोड़ि एकावन अडलखा, अडसय एकाशी हजार ।
चालीश अक्षर पदतणां, कहे अनुयोग दुवार ॥४॥
अर्थान्ते इहां पद कह्यु, जिहां अधिकार ठराय ।
ते पद श्रुतने प्रणमता, ज्ञानावरणी हटाय ॥५॥
अढार हजार पदे करी, अंग प्रथम सुविलास ।
दुगुणाश्रुत बहु पद ग्रहे, ते पद श्रुत समास ॥६॥
पिंड प्रकृतिमां एक पदे, जाणे बहु अवदात ।
क्षयोपशमनी विचित्रता, तेहज श्रुत संघात ॥७॥
पंचोतेरे भेदे करी, स्थितिबंधादि विलास ।
कम्मपयडी पयडी ग्रहे, श्रुत संघात सकास ॥८॥
गत्यादिक जे मार्गणा, जाणे तेहमां एक ।
विवरण गुणठाणादिके, तस प्रतिपत्ति विवेक ॥९॥
जे बासट्ठि मार्गणपदे, लेश्या आदि निवास ।
संग्रह तरतम योगथी, ते प्रतिपत्ति समास ॥१०॥
संतपदादिक द्वारमां, जे जाणे शिव लोग ।
एक दोय द्वारे करी श्रद्धा श्रुत अनुयोग ॥११॥

वली संतादिक नव पदे, तिहां मार्गणा भास।
सिद्धतणी स्तवना करे, श्रुतअनुयोग समास ॥१२॥
प्राभृत प्राभृत श्रुत नमुं, पूरबना अधिकार।
बुद्धि प्रबल प्रभावथी, जाणे एक अधिकार ॥१३॥
प्राभृत प्राभृत श्रुत समा. सामिध लब्धि विशेष।
बहु अधिकार इरया ग्रहे क्षीराश्रव ॥१४॥
पूरव गत वस्तु जिके, प्राभृत श्रुत ते नाम।
एक प्राभृत जाणे मुनि, तास करूं परिणाम ॥१५॥
पूरव लब्धि प्रभावथी, प्राभृत श्रुत समास।
अधिकार बहुला ग्रहे, पद अनुसार विलास ॥१६॥
आचारादिक नामथी, वस्तु नाम श्रुत सार।
अर्थ अनेक विधे ग्रहे, ते पिण एक अधिकार ॥१७॥
दुगसय पणवीस वस्तु छे, चौद पूरवनी सार।
जाणे तेहने वंदना, एक श्वासे सो वार ॥१८॥
उत्पादादि पूरव जे, सूत्रअर्थ एक सार।
विद्या मन्त्रतणो कह्यो, पूरव श्रुत भंडार ॥१९॥

बिंदुसार लगे भणे, तेहिज पूरव समास।
श्री शुभवीरने शासने, हो जो ज्ञान प्रकाश ॥२०॥

॥ २० खमासमण ॥

इस प्रकार २० खमासमण देने के बाद एक पसल (दो हाथ में अक्षत का धोबा भरे) अक्षत लेकर खडा रहे, इसके बाद में नीचे लिखी हुई गाथा बोले।

बोधागाधं सुपदपदवी नीरपूराभिरामं,
जीवाहिंसा-विरललहरी-सँग मागाहदेहं
चूलावेलं गुरुगममणि-सँकूलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥

यह स्तुति कहकर बाद में नीचे की गाथा कहे—

"ज्ञान समो कोई धन नहीं, समता समो नहीं सुख।
जीवित सम आशा नहीं, लोभ समो नहीं दुःख" ॥

इस प्रकार बोल कर अपने अपने कुंभ मे एक एक पसल अक्षत डाले, अक्षत डालने के बाद फिर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रुतदेवता आराधनार्थं काउस्सग्ग करूँ ? इच्छं, श्रुतदेवता आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ• कहकर एक नवकारका काउस्सग्ग करें, काउस्सग्ग पारके नीचे लिखी हुई स्तुति कहे—

॥ स्तुति ॥

त्रिगडे बेसी श्री जिनभाण, बोले भाषा अमीय समाण;

मत अनेकांत प्रमाण

अरिहंत शासन सफरी सुखाण

चउ अनुयोग जिहां गुण खाण;

आतम अनुभव ठाण

सकल पदारथ त्रिपदी जाण, जोजन भुमि पसरे वखाण

दोष बत्रीश परिहाण

केवली भाषित ते श्रुतनाण,

विजय लक्षमी सूरि कहे हुमान

चित्त धरजो जे समाण (१)

इतना कहने के बाद प्रदक्षिणा देनी चाहिये तथा काउस्सग्ग करना चाहिये और माला फेरनी चाहिये।

॥ इति अक्षयनिधि तप क्रिया विधि समाप्त ॥

शुद्धि पत्रक

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
६	१८	तन्त्रादि	यंत्रादि
८	१५	पत्येक	प्रत्येक
१०	१०	३०	२०
१०	१५	र्हीं	ह्रीं
१४	८	प्रजोपकरण	पूजोपकरण
१६	१	खङ्ग	खड्ग
२३	२	नेत्र	मंत्र
२३	७	संश्रीयुताय	संयुताय श्री
३८	१०	प्रकाश	प्रकाशक
३६	१६	नव०५	×
४८	१	आसन	भासन
४६	११	जया	यजा.
५१	१६	तत्वना	तत्त्वता
५४	४	निरधासेती	निरधार सेती
५५	७	नमऽर्हत	नमोऽर्हत
५६	३	परिणय	परिणाम
६६	१०	तापणो	तारणो
७६	६	षटू	षट्
७८	११	वाय	वायग

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
८०	३	भवमय	भवभय
८०	१०	उपाज्याय	उपाध्याय
८०	१४	यथा	थया
८५	२	सउसठ	सडसठ
८७	२	पष्टी	पीछे
८६	१०	ठंडी	छंडी
८६	१३	पुस्यू	पूयूं
६८	१६	जोडी	करजोड़ी
६६	८	हूए	हुए
१००	४	एषा	एवा
१०१	२	गथे	गए
११०	२	पज्वइ	पज्जव
११०	२	माण	नाण
११७	६	परिपट्ट	परिअट्ट
१२०	६	अण्यावाध	अव्यावाध
१२२	८	पचिन्द्री	पंचेन्द्री
१३१	३	सिद्धि	सिद्ध
१३१	५	डंवरू	डुँबरू
१४८	११	पाणस्य	पाणस्स
१५२	७	मुरत	मुख

नोट :—इस शुद्धि पत्रकमें दी गई शुद्धियोंको इस पुस्तकमें उस-उस स्थान पर शुद्ध कर लें।

हिन्दी भाषामें शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाले अपूर्व ग्रन्थ

१—शकुन प्रदीपादि ग्रन्थ मूल तथा भाषांतर विवेचन सहित।

यह ग्रन्थ अनेक जैनाचार्यों तथा जैन यतियोंकी कृतियोंका संग्रह है। मूल लेखक जैन यति श्री जयलालजी तथा दादा साहेब श्री जिनदत्त सूरि आदि अनेक प्राचीन अष्टांग निमित्त शास्त्रोंके धुरन्धर विद्वान हैं।

इस ग्रन्थका विषय नामसे ही ज्ञात है=इसमें शुभाशुभ शकुनोंका बड़ी सरलतापूर्वक विवेचन किया है। इस ग्रन्थसे साधारण पढ़ा लिखा तथा विद्वद् समाज सब लाभ उठा सकेंगे।

२—स्वरोदय ज्ञान महान योगी श्री चिदानन्दजी कृत हिन्दी पद्योंका बड़ी सरल भाषामें बड़ी सरल पद्धतिसे विवेचन सहित भाषांतर किया गया है। इस ग्रन्थकी सहायतासे साधारण से साधारण व्यक्ति भी इस विषयका पंडित बन सकता है। ज्योतिष सम्बन्धी किसी भी प्रश्नका निर्णय नाककी नासिका पर हाथ रखकर तुरंत मालूम कर सकते हैं। (यह ग्रन्थ अनेक यंत्रों तथा फुटनोटों सहित अधिकसे अधिक सरल तथा उपयोगी तैयार किया गया है।

३—स्वप्न प्रदीप (मूल संस्कृत श्लोक अर्थ विवेचन सहित)

अनेक प्राचीन शास्त्र भंडारोंसे इस ग्रन्थका संकलन किया गया है। स्वप्न क्या है ? कितने प्रकारका है ? कौन सा स्वप्न फलदायी है ? कौन सा नहीं है। देवता द्वारा भविष्य निर्णय। अशुभ स्वप्नके दोष निवारण आदिके उपाय इत्यादि इत्यादि अनेक प्रकारका सुन्दर संग्रह है।

४—प्रश्नावली प्रदीप यह भी अनेक प्रकारकी प्रश्नावलियोंका सुन्दर संग्रह है। मनकी किसी प्रकारकी शंकाको मनमें विचार कर अङ्गुली रख कर अपने भविष्यका निर्णय स्वयं कर सकते हैं।

५—हस्तरेखा प्रदीप यह ग्रन्थ पौर्वात्य तथा पाश्चात्य पद्धतिसे तुलनात्मक विस्तृत विवेचनात्मक तैयार किया गया है। अपने हाथकी रेखाओंसे भूत, भविष्यत तथा वर्त्तमान अपने भाग्यकी परीक्षा निर्णय आदि प्राप्त कर सकते हैं।

६—सामुद्रिक शास्त्र (मूल तथा भाषांतर विवेचन सहित)

स्त्री, पुरुषोंके पैरकी अङ्गुलीसे सिरकी चोटी तकके आकार प्रकार तथा रेखाओं आदि द्वारा, मनुष्यके स्वभाव, शील, भूत, भविष्य, वर्त्तमान सम्बन्धी सब बातोंका ज्ञान करानेवाला ग्रन्थ।

नोट :—जो महाशय दो रुपया भेजकर स्थायी ग्राहक बनेंगे उनको ये सब ग्रन्थ पौनी कीमतमें मिलेंगे।

पत्र व्यवहारका पता तथा प्राप्ति स्थान :—
पं० हीरालाल दूगड़ जैन,
C/o ओसवाल जनरल स्टोर्स
लोहार गली आगरा (यू० पी०)

३—जैन तत्त्वबोध मूल्य १।)

इस पुस्तकमे विद्वान लेखकने जैनधर्म-दर्शन इतिहास-साहित्य जैन पर्वो, जैन तीर्थो, जैनधर्म के व्रतों के पालन करने से ही विश्व को शान्ति प्राप्त हो सकती है इत्यादि विषयों का बड़ी सुन्दर और रोचक शैली से वर्णन किया है। यह पुस्तक जैन धर्म को समझने के इच्छुक महानुभावों के लिए तथा स्कूलों व कालेजों के विद्यार्थियों मे अधिक से अधिक प्रचार पाने के योग्य है जिससे जैनधर्म का परिचय पाकर आजके युग के विद्यार्थी एवं विद्वान जैनधर्मका वास्तविक स्वरूप समझेंगे एवं आजकी विश्व व्यापी युद्ध समस्याओं से सदा के लिए छुटकारा पाने के लिए जैनधर्म के प्रसार की आज विश्व मे कितनी आवश्यकता है उसे जानकर आश्चर्य चकित हो उठेंगे।

४—नरक दुःख-दिग्दर्शन—चित्रपट सुन्दर आर्टबोर्ड

पर। साइज १४" × २०" मूल्य १॥)

यह चित्र भी बड़े परिश्रम से तैयार किया गया है। इसमे ४२ नरक चित्र अत्यन्त शिक्षाप्रद तथा चित्ताकर्षक हैं। तीन रगे प्रिंट हैं।

इसमे अठारह पाप स्थान सेवन, व्रतों के अतिचारो आदि का सेवन, सात कुव्यसनों का सेवन, मिथ्यात्व सेवन, भक्षा-भक्षण आदि के फल स्वरूप नरक मे किस प्रकार से जीव दुःख भोगता है आदि बातों का बड़ी ही सुन्दर रीति से दिग्दर्शन

कराया है। इन चित्रों के प्रचार से अनेक मनुष्यों ने मांसाहार, दुराचार सेवन, अभक्ष्-भक्षण का त्याग करदिया है। फ्रेम में मढा कर मकान और दुकान आदि में रखने योग्य हैं। प्रत्येक मुमुक्षु आत्मा को इसका खूब प्रचार करना चाहिए। प्रभावना में बांटकर अनेक जीवोंका कल्याण कर सकते हैं।

५—श्रीनवपद आराधन विधि तथा श्री अक्षय निधि तप विधि मूल्य ।॥)

इस पुस्तकमें श्री नवपद ओलीमे प्रतिदिन करनेकी क्रिया, वासक्षेप, स्नात्र, नवपद, अष्ट प्रकारी पूजाएं, श्री सिद्धचक्रके नवपदोंके अलग-अलग एवं नवपदात्मक सिद्धचक्रके चैत्यवन्दन, स्तवन, स्तुतिया, आयंबिलमें उपयोगमे आनेवाले आहार आदि के वर्णनकी सज्झाय, आरत्तिया, मंगलदीवा, उपयोगी पच्चक्खान इत्यादिका सुन्दर संग्रह है। इसके साथ अक्षयनिधि तप आराधन की विधि भी दे दी गई है, अति उपयोगी है।

नोट—मंडल की तरफ से प्रकाशित सब प्रकार की पुस्तकों के लिए बड़ा सूची पत्र मंगावें।

प्राप्ति स्थान :—श्रीआत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मंडल

रोशन-मोहल्ला, आगरा।